हँसती दुनिया















नवम्बर-दिसम्बर


WEDDING SAREES, SUIT-DUPATTA & LENGHA CHUNNI FOR ALL OCCASIONS
CSE
CHHABRA®
Saree Emporium
MANUFACTURERS & WHOLESALE DEALERS OF HIGH FASHION SAREES
488-489 KATRA ASHRAFI, CHANDNI CHOWK, DELHI-110006
PHONES : SHOP : 3262011, 3273971
RESI. : 6413052 FACTORY : 89-20305
SISTER CONCERN
CHHABRA SAREE MANDIR®
FACTORY :
AMRRITA TEXTILE INDUSTRIES, NOIDA
WE HAVE NO OTHER BRANCH IN DELHI
BEWARE OF SIMILAR NAMES & BROKERS.

वर्ष 25
अंक 11

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

नवम्बर
1998

कहानियां

कविताएं

लेख

स्तम्भ

चित्रकथाएं

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री निर्मल जोशी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिण्टर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।

कार्यालय फोन :- 7430181

सम्पादक (अवैतनिक)	सहायक सम्पादक	कला निर्देशक	मुख-पृष्ठ
विनय जोशी	विमलेश आहूजा	दीपक बग्गा	किशोर निरंकारी

वार्षिक चन्दा : 30/- रु. इंग्लैण्ड £7, अमेरिका $12 कनाडा $15

जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. इंग्लैण्ड £100, अमेरिका $150 $200

एक प्रति : 4/- रु

सबसे पहले

भइया : नानू आज बहुत खुश दिखाई दे रहे हो! क्या बात है?

नानू : (अकड़कर) भइया, वो है न पिंटू की बहन; बड़ी आई थी मुझे समझाने। मैंनें उसे वो जवाब दिये कि देखती ही रह गई। अब कभी वह कोशिश नहीं करेगी मुझे समझाने की; आखिर मेरी जीत हुई है!

भइया : नानू! पिछले सप्ताह तुम्हारा झगड़ा किट्टी के भइया से हुआ था न!

नानू : नहीं भइया, वो तो हम बच्चों की बहस में अचानक आ टपके और लगे बड़े-बड़े भाषण देने। मैंने तो बस साफ-साफ ही कहा था कि हमें भाषण सुनने का शौक नहीं है।

भइया : और उसके बाद तुम्हारा उस मुहल्ले में जाना बन्द हो गया ना।

नानू : तो क्या हुआ! मेरे पास दोस्तों की कमी थोड़े ही है।

भइया : नानू! अब तक तीन मुहल्लों में तुम्हारा जाना बन्द हो चुका है व कई दोस्तों को उनके माता-पिता तुमसे बोलने या खेलने नहीं देते। है नाँ।

नानू : मुझे क्या फर्क पड़ेगा; मैं अपनी हाजिर-जवाबी आदि से और दोस्त बना लूँगा।

भइया : ओहो नानू, कुछ तो समझो! जिसे तुम हाजिर जवाबी समझते हो लोग उसे बतमीज़ी व बदज़ुबानी कहते हैं। समझे! इसी उम्र में तुमने दोस्त खो दिये हैं। तुम्हारी यही गन्दी आदत और गंदी होती जायेगी और उधर तुमसे लोग मिलना तक पसन्द नहीं करेंगे। नानू आज पहली बार सिर झुका कर खड़ा था व सब सुन रहा था। भइया फिर बोले मैंने उसे वो जवाब दिये, वाला वाक्य अगर तुमने न बदला तो हम सब भी तुम्हारे जवाब सुनना बन्द कर देंगे। समझे। इस प्रकार भइया की बात उसके दिमाग़ में गहरी उतर गई।

प्यारे साथियों! जानते हो इस बार ऐसा क्यों हुआ जबकि नानू को समझाने की कोशिश तो कई लोगों ने पहले भी की थी।

वास्तव में जब भी कोई व्यक्ति उसे कुछ भी समझाने का प्रयास करता तो नानू तुरन्त जवाब दे देने के अहंकार में मस्तिष्क में कुछ जाने ही नहीं देता था। इसलिये आज तक वह कुछ सीख भी नहीं पाया था। भइया में अपार श्रद्धा व भइया के समझाने के सुन्दर ढंग से उनकी बात उसके मस्तिष्क में गहरी उतर गई थी।

प्यारे साथियों! जिस प्रकार समुद्र की गहराई में उतरने वालों को ही दुर्लभ मोती इत्यादि प्राप्त होते हैं इसी प्रकार हमारे शरीर में, मन मस्तिष्क में प्रभु परमात्मा का वास है, जो समुद्र से भी अधिक गहरा है। प्रभु में सभी प्रकार का ज्ञान-विद्यामान होता है। अगर हम गहराई से स्वयं को एकाग्र चित करके प्रभु परमात्मा की ओर अन्तर्मुखी होकर अनुभव करने लगें तो हर प्रकार के ज्ञान के द्वार स्वयं ही खुलते चले जायेंगे। इसके लिये केवल दो साधनों की आवश्यकता बाहर से पड़ती है व शेष हमें स्वयं को सब कुछ करना होता है। वे साधन हैं— हमें समझाने वाला सदगुरू व दूसरा उस वातावरण को बनाये रखने वाला साधन—अर्थात् सन्तों के समागम। इन दोनों की निकटता द्वारा मनुष्य अनुभूति की गहराई में उतरता है जहाँ से सहज मृदुलता, सरलता व सरसता पनपती है। उथला व्यक्ति क्रोध, वासना, व लालच आदि में लिप्त रहता है। गम्भीर व्यक्ति गुणों से सम्पन्न हो जाता है। ईश्वरीय गुणों का मनुष्य में जाग जाना मनुष्य की वास्तविक सफलता व तरक्की है।

मुझे आशा है तुम में से प्रत्येक इन ईश्वरीय गुणों से लबालब भर जाने का प्रयास करता रहेगा। ताकि आने वाला समय विश्व को विनाश से बचा सके।

अन्त में कार्यालय में आये दीपावली के बधाई सन्देशों के लिये धन्यवाद तथा हमारी ओर से भी बधाई स्वीकारें।

❑ **विनय जोशी**

परीक्षाफल

राम और श्याम नवमीं कक्षा पढ़ते थे। उनका घर एक-दूसरे से सटे होने के कारण दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी, किन्तु पढ़ाई में दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वन्दी माने जाते थे।

यह महीना उनके लिये परीश्रम का महीना था। उनकी परीक्षा चल रही थी और एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में दोनों ही जी-तोड़ मेहनत कर रहे थे। परीक्षा खत्म हुई। दोनों का पेपर बहुत अच्छा हुआ था। मगर जब परीक्षाफल घोषित हुआ तो राम, श्याम से सिर्फ दो अंकों से आगे था। परन्तु इस परीक्षा के बाद नैतिक शिक्षा की परीक्षा होती थी। उसके बाद ही, कक्षा में अव्वल कौन आया, उसका सही फैसला हो पाता था। इसीलिये इस परीक्षा का भी बड़ा महत्व था। जबकि इसमें अनुत्तीर्ण छात्रों को अगली कक्षा में प्रवेश नहीं दिया जाता था।



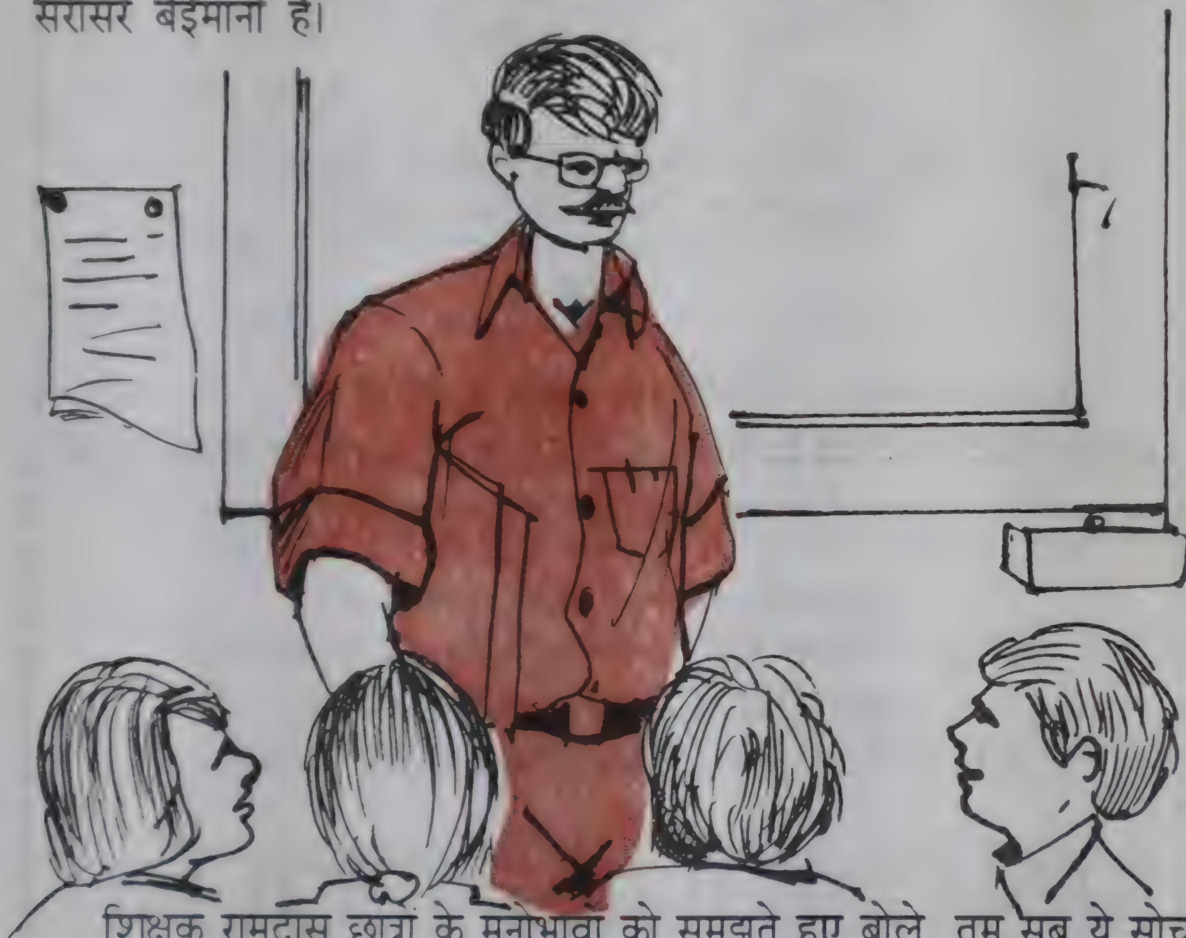


राम नैतिक शिक्षा की परीक्षा के लिए जी-जान से तैयारी करने में जुट गया। उसे डर था कि कहीं श्याम उससे आगे न निकल जाये क्योंकि सिर्फ दो अंकों का ही तो अंतर था। आखिर परीक्षा का दिन आ ही गया। दोनों मित्र परीक्षा देने के लिए एक साथ निकल पड़े।

अचानक रास्ते में मोड़ पर एक लड़का अपनी साइकिल काबू में नहीं रख सका। नतीजन उधर से आते हुए ट्रक से टकरा गया। उसे काफी चोटें आई थीं। वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तुरन्त अस्पताल पहुँचाना जरूरी था। मगर कोई उसकी सहायता के लिए नहीं आया तो श्याम से रहा नहीं गया। चलो, राम उसे अस्पताल लिये चलते हैं। उसकी स्थिति काफी गम्भीर है। इस पर राम ने उसे झिड़क दिया—तुम्हारा दिमाग खराब है क्या? परीक्षा का समय हो रहा है। मुसीबत मोल न लो, जल्दी चलो।

मगर श्याम नहीं माना तो वह चला गया। उसका लिखित और मौखिक, दोनों ही परीक्षाओं का उत्तर बहुत अच्छा बना। श्याम की परीक्षा में न पहुँचने पर उसे दुःख भी हुआ और खुशी भी। दुःख इस बात का कि दोनों अच्छे मित्र थे और श्याम एक साल पिछड़ जायेगा या पूरक आ जायेगा और खुशी इस बात की हो रही थी कि वह श्याम को पहली बार मात दे रहा था नहीं तो हमेशा उससे एक या दो अंकों से ही पीछे रह जाता था।

अगले दिन परीक्षा परिणाम घोषित होने वाला था। सभी छात्र धड़कते दिल से विद्यालय पहुँचे। श्याम पहले से ही जानता था कि वह पूरक ही आयेगा जबकि राम एक नई आशा के साथ काफी प्रसन्नचित था। निश्चित समय पर परीक्षाफल सुनाने कक्षा शिक्षक रामदास जी आये और उन्होंने जैसे ही परिणाम सुनाया सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने कहा इस वर्ष भी पूरे कक्षा में श्याम प्रथम और राम द्वितीय आया था। छात्रों में खुसर-पुसर होने लगी। श्याम तो परीक्षा में उपस्थित भी नहीं था फिर पूरक आने के बजाय प्रथम कैसे आ गया? यह सरासर बेईमानी है।



शिक्षक रामदास छात्रों के मनोभावों को समझते हुए बोले, तुम सब ये सोच रहे होंगे कि श्याम बगैर परीक्षा दिये कक्षा में प्रथम कैसे आ गया? जबकि उसे नियमतः पूरक परीक्षा के लिये आना चाहिए था।

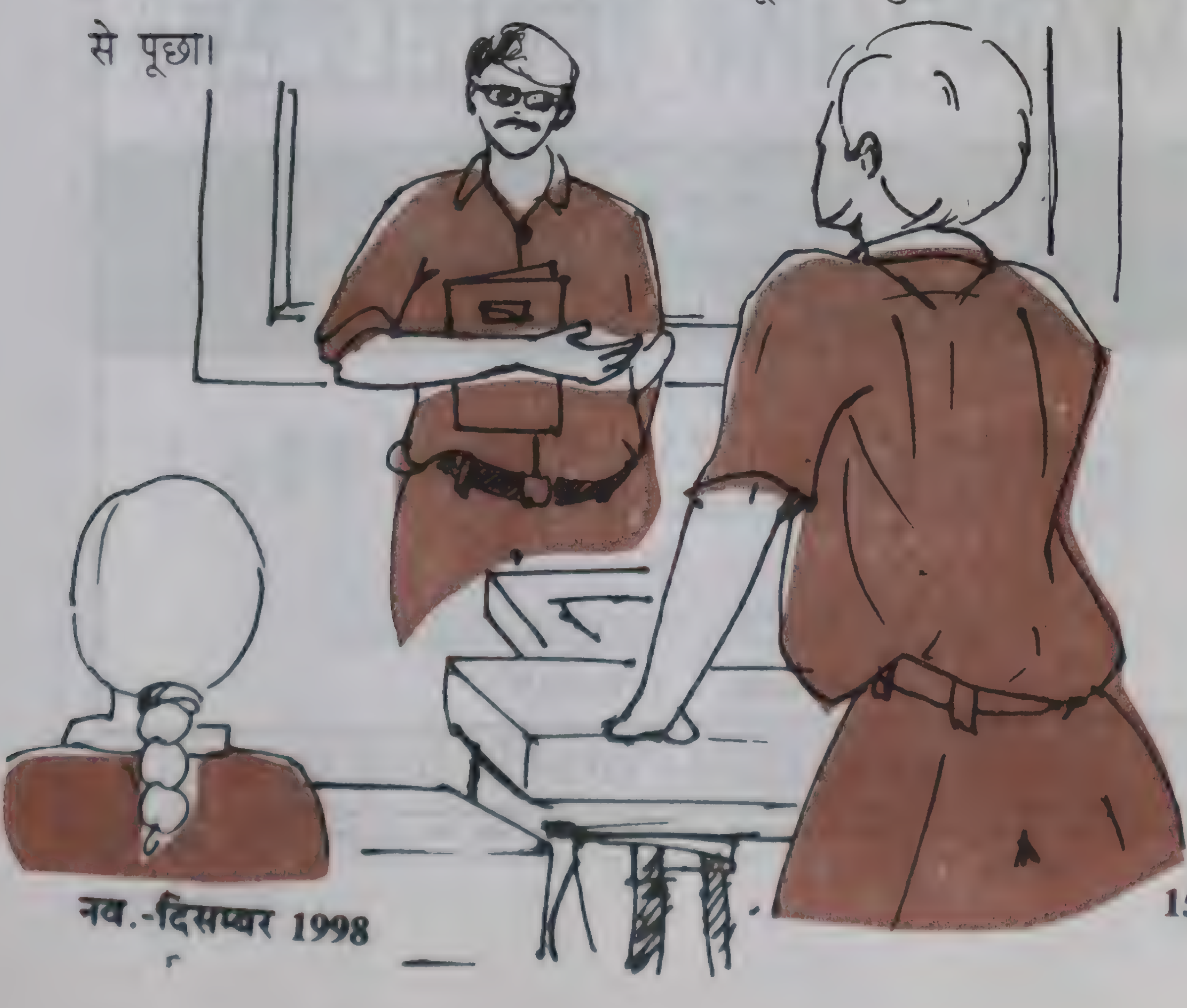
सभी छात्र एक स्वर में बोले—हाँ, सर! हम यही सोच रहे हैं।

तो सुनो, मैं नैतिक शिक्षा के पीरियड में तुम लोगों को हमेशा यह बताया करता था कि नैतिक शिक्षा का महत्व लिखित या मौखिक से नहीं बल्कि व्यवहारिक जीवन में उतारने से है। इसे विद्यालय या विद्यालय के बाहर व्यवहार

में लाना चाहिए। यद्यपि सबके व्यवहारिक जीवन की परीक्षा लेना हमसे सम्भव नहीं इसलिए हम उसकी लिखित एवं मौखिक परीक्षा कराते हैं लेकिन कोई इसे व्यवहारिक जीवन में उतारता है तो परीक्षा में इससे बड़ी उपलब्धि और क्या होगी?

—राम और श्याम जब नैतिक शिक्षा की परीक्षा देने आ रहे थे तो रास्ते में एक लड़का स्वयं की गलती से अपनी साइकिल काबू में नहीं रख सका और ट्रक से टकरा गया, उसे श्याम ने तुरन्त अस्पताल पहुँचाया और वह लड़का बच गया। अगर श्याम भी राम की तरह अपनी परीक्षा देने चला आता तो शायद वह साइकिल सवार नहीं बच पाता। आज की व्यस्त जिन्दगी में किसी को पल भर भी फुर्सत नहीं। मगर किसी को मदद की आवश्यकता हो तो उसे अवश्य ही अपना कुछ समय देना चाहिए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में रहकर किसी दूसरे से सहयोग की आशा रखता है। इस प्रकार श्याम ने नैतिक शिक्षा को अपने व्यवहारिक जीवन में उतारा है। इसीलिए उसे परीक्षा में प्रथम चुना गया।

—लेकिन सर! आपको ये सब बातें मालूम कैसे हुई। —श्याम ने आश्चर्य से पूछा।



रहस्योद्घाटन करते हुए रामदास जी बोले—वह घायल लड़का जिसे तुमने अस्पताल पहुँचाया हमारे हेडमास्टर साहब का पुत्र है। उसने अपने पिताजी को पूरी घटना से अवगत कराया। फिर हम परीक्षा में किसी की अनुपस्थिति पर उसके कारण जानने के लिए किसी पड़ोसी लड़के से पता भी करते है। इसलिए बहुत कुछ जानकारी राम से भी मिल गई थी, तभी हमें यह सब मालूम हुआ।

छात्रों के बीच पुनः खुसर-पुसर हुई, फिर राम ने खड़े होकर कहा— सर! श्याम ने वास्तव में नैतिकता के महत्व को न सिर्फ समझा बल्कि उसे अपने जीवन में अपनाया भी। उसने जो कार्य किया है वह बड़ी गर्व की बात है। हम सब वादा करते हैं कि अब हम भी अपने जीवन में इसे अपनायेंगे हम सब छात्रों ने निश्चय किया है कि हमारी ओर से श्याम को इस महान कार्य के लिए विशेष पुरस्कार दिया जाए। ●

कविताः चन्द्रभान निरंकारी (सोनीपत)

चूहिया जब स्कूल चली



कोट पहन और टाई लगाकर,
चूहिया जी जब स्कूल चलीं।
हुई मुहल्ले भर में चर्चा,
हल्ला मच गया गली-गली।



कहती हैं कि पढ़-लिखकर,
मैं जब वकील बन जाऊंगी।
केस करूँगी बिल्ली पर,
और फांसी उसे दिलाऊँगी।



या फिर बन कर हवलदार मैं,
लाठी ले पहरा दूँगी।
पकड़-पकड़ कर सब चोरों को,
जेल में बंद कराऊंगी।



या दिल्ली की कुर्सी पर,
बैठूंगी राज चलाऊंगी,
चूहों की आजादी का बिल,
संसद में ले आऊंगी।



चूहों की पहचान अलग हो,
चूहों का भी एक दल हो।
आजादी से जीने का हक,
चूहों को भी हासिल हो।



हैं स्वतंत्र भारत चूहे फिर,
क्यों बिल्ली के जुल्म सहें।
मैं ऐसा माहौल रखूँगी,
दोनों मिलकर सदा रहें।

सिद्धान्तों के विरुद्ध समझौता नहीं

बहुत दिन पहले की बात है। काशी के किसी घाट पर कोई बूढ़े आदमी नहाने के लिए सीढ़ियों से उतर रहे थे। अचानक पैर फिसल गया और वे डूबने लगे। किनारे पर बहुत से लोग खड़े थे, पर कोई भी उन्हें बचाने नहीं आया। इतने में एक साहसी युवक पानी में कूद पड़ा और उस बूढ़े आदमी को किनारे पर ला दिया। युवक की ओर देखते हुए बूढ़े आदमी ने कहा—बोलो, इसके बदले में तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ?

" सेवा का कोई मूल्य नहीं होता"—युवक ने कहा।

नहीं बेटा, कुछ तो स्वीकार करना ही होगा। तुमने मुझे जीवनदान दिया है। अगर अभी तुम्हारी समझ में कोई बात नहीं आ रही है तो लो यह कार्ड अपने पास रखो और जब कभी कलकत्ता आओगे तो मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करूँगा। यह कहकर वे चले गए।

कुछ दिन बाद वह युवक कलकत्ता गया और उस बूढे व्यक्ति के दिए हुए पत्ते पर पहुँचा।पहले तो वे उस युवक को पहचान न सके। परिचय पाते ही पहचान गए और बोले— पहचान गया भाई, बोलो क्या चाहते हो?

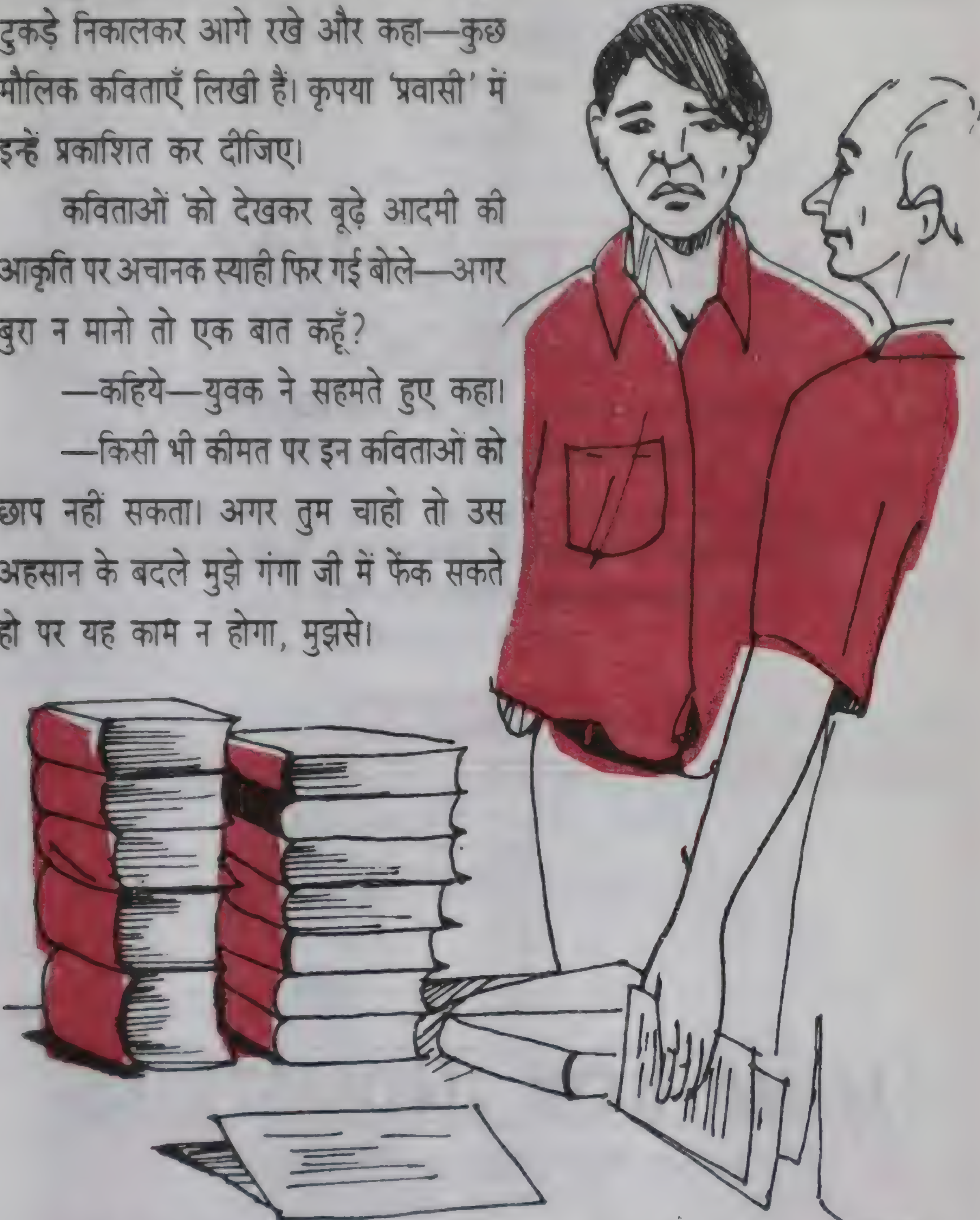


युवक ने अपनी जेब से कागज के कुछ टुकड़े निकालकर आगे रखे और कहा—कुछ मौलिक कविताएँ लिखी हैं। कृपया 'प्रवासी' में इन्हें प्रकाशित कर दीजिए।

कविताओं को देखकर बूढ़े आदमी की आकृति पर अचानक स्याही फिर गई बोले—अगर बुरा न मानो तो एक बात कहूँ?

—कहिये—युवक ने सहमते हुए कहा।

—किसी भी कीमत पर इन कविताओं को छाप नहीं सकता। अगर तुम चाहो तो उस अहसान के बदले मुझे गंगा जी में फेंक सकते हो पर यह काम न होगा, मुझसे।



प्यारे बच्चों! तो तुम जानना चाहोगे कि वह बूढ़ा आदमी कौन था? वह थे ''प्रवासी'' और ''माडर्न रिव्यू'' के ख्याति प्राप्त सम्पादक श्री रामचन्द्र चटोपाध्याय। बात यह थी कि उस युवक की कविताएँ ''प्रवासी'' के योग्य न थी। वे किसी भी मूल्य पर 'प्रवासी' का स्तर गिराने के पक्ष में न थे। सिद्धान्तों से समझौता किसी भी कीमत पर नहीं करना चाहिये। ●

लोहे का आदमी

लोहा, लोहा है। आदमी, आदमी है।

क्या तुमने लोहे का आदमी देखा है? शायद नहीं। तो आओ तुम्हें लोहे के आदमी की एक प्रेरक घटना बताये।

उन दिनों एक शिक्षक ने पुस्तकों की दुकान खोल रखी थी। वे अपने लड़कों को कहा करते थे कि सभी लड़के मेरी दुकान से ही अपनी पुस्तकें खरीदें। सभी बालक तो एक से नहीं होते? स्वभाव भी तो एक सा नहीं होता सभी का। शिक्षक का आदेश एक बालक को उचित न लगा। यह आग्रह भरा आदेश उसके स्वाभिमान के विपरीत लगा। उसने जान-बूझकर अपने लिए दूसरी दुकान से पुस्तकें खरीदीं।

शिक्षक को यह बात बुरी लगी। शिक्षक ने अपनी छड़ी लपलपाते हुए बालक की धुलाई कर दी।

वह बालक भी अपनी जगह अड़ा रहा। उसने कहा—क्या यह पुस्तक दूसरी जगह नहीं बिकती? क्या यह पुस्तक दूसरी जगह नहीं खरीदी जा सकती? आपका



साँप

आयरलैंड, मेगाग्स्कर और अटलांटिक महासागर को छोड़कर सांप पूरी धरती पर फैले हुए हैं। प्राणी विज्ञान में इसे सरिसृण (उरग) वर्ग के आर्डर स्क्वामाटा और सब-आर्डर आफेडिया के अंतर्गत रखा गया है।

पूरे विश्व में सांप की करीब 2700 जातियाँ पायी जाती हैं। इनमें से मात्र 150 जातियाँ विषैली हैं। भारत में 500 प्रकार के स्थलीय और 30 प्रकार के समुद्री सांप पाये जाते हैं। भारत में पाये जाने वाले 40 स्थलीय और 28 समुद्री सांप विषैले होते हैं। स्थलीय और समुद्री सांपों में अंतर स्पष्ट होता है जिससे इन्हें पहचाना जा सकता है। समुद्री सांपों पर शल्क बड़े-बड़े होते हैं। समुद्री सांप की पूँछ भी चपटी होती है। ऐसी पूंछ तैरने में इनकी सहायता करती है।

सांप का विष-दंत उसके मुँह में अन्य दांतों से अगले पंक्ति में होता है। कुछ सांपों में विष-दंत उसे मुँह में बहुत पीछे रहता है। ऐसे सांपों के काटने से उसके विष-दंत से विष नहीं निकलता है। अतः विषैला होने के बावजूद ऐसे सांपों के काटने पर विष का प्रभाव नहीं होता है।

विष दो छोटी ग्रंथियों में पाया जाता है जो सांप के सिर में होती हैं। इन ग्रंथियों का संबंध विष दंतों से होता है। जब सांप काटता है तो विषग्रंथि से विष निकल कर दांत में आ जाता है। वहाँ से वह दांत के सहारे मनुष्य के शरीर में पहुँच जाता है।

सांप का विष काफी विषैला होता है। इसका विष साफ, पीलापन लिये हुए स्वादहीन, गंधहीन, रवादार एवं जल में घुलनशील होता है। यदि इसका विष इंजेक्शन से मनुष्य की नस में पहुँचा दिया जाते तो मनुष्य एक सैकंड में मर जायेगा।

यह कोल्ड ब्लडेड जंतु है। इसलिए इसे भोजन की आवश्यकता मात्र शरीर पौषण और वृद्धि के लिये होती है। बिना भोजन किये भी यह बहुत दिनों तक रह सकता है। यह सापं की उम्र और आकार पर निर्भर करता है कि वह कितने

दिनों तक बिना भोजन के भी काम चला सकता है। ऐसा देखा गया है कि अजगर बिना कुछ खाये हुए ढ़ाई वर्षों तक रह सकता है।

सांप मांसाहारी होता है। यह ऐसे किसी भी छोटे बड़े जंतु को खा सकता है जो आसानी से निगला जा सकता हो। मुख्य रूप से यह कीड़ा-मकोड़ा, चूहा, छिपकली, मेंढ़क खाता है। कुछ बड़े सांप छोटे सांपों को भी खाते हैं।

सांप के पैर नहीं होते। यह रेंगकर दूरी तय करता है। एक ही दिशा की सीध में यह काफी तेजी से रेंग सकता है। रेंगकर चलने के कारण अचानक घुमने में इसे कठिनाई होती है। इसी कारण घुमावदार ढंग से भागने वाले का सांप पीछा नहीं कर पाता है। अजगर सांप की पूंछ के नजदीक एक जोड़ा ऐसा अवयव पाया जाता है जो इसके पैर का अविकसित अंग होता है। इससे यह साबित होता है कि सांप के पूर्वज भी पैर वाले प्राणी थे।

इसके एक जोड़ी आँखें होती हैं। इसकी आँखों पर पलक नहीं होती। आँखें पारदर्शी झिल्ली से ढकी होती हैं।

सांप के कान नहीं होते फिर भी यह हल्की से हल्की आवाज़ से भी सावधान हो जाता है। इसे धरती के कंपन से आवाज़ का आभास होता है। बोलने के लिए भी सांप के पास कोई अंग नहीं होता है। यह अपनी नाक से सिसकता है।

यह अधिकतर बिल में रहता है। लेकिन यह बिल अपने से नहीं बनाता है चूहों आदि के बिल में घुस यह अपना आधिपत्य जमा लेता है। तब यह सुरक्षित आवास की तलाश में इधर-उधर भटकता रहता है। ऐसे ही समय यह मनुष्य के घरों में भी भटक जाता है। यह भोजन की तलाश में मुख्यतः रात के समय निकलता है।

कुछ सांप तो पेड़ों से लटके-लटके ही अपना सारा जीवन बिता देते हैं। कुछ सांप पानी में भी रहते हैं। सभी सांप कुशल तैराक होते हैं।

मादा सांप अंडा देती है। एक बार में यह 20-25 अंडे देती है। इनके अंडों के बहुत सारे दुश्मनों में एक दुश्मन खुद सांप भी है। इसी कारण सांप के कुछ ही अंडों से बच्चे निकल पाते हैं।

अजगर सबसे बड़ा सांप होता है। यह 10 मीटर तक लम्बा और वज़न में सौ से डेढ़ सौ किलोग्राम तक होता है। अजगर विषहीन होता है। सबसे बड़ा विषैला सांप किंग कोबरा है। इसकी अधिकतम लम्बाई 6 मीटर होती है।

सांप डरपोक स्वभाव का जंतु है। यदि छेड़छाड़ न किया जाये तो यह किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता है। तंग किये जाने पर या ऐसी शंका होने पर ही यह आक्रमण करता है। सांप के काटने पर यह जानना जरूरी है कि सांप विषैला था या विषहीन।

विषैले सांप के काटने पर शरीर पर केवल दो घाव होते हैं। लेकिन विषहीन सांप के काटने पर दो से अधिक घाव एक ही पंक्ति में होते हैं।

सांप के काटने पर अधिकांश मृत्यु का कारण भय होता है क्योंकि बहुत से सांप विषहीन होते है। सांप काट ले तो प्राथमिक उपचार के बाद रोगी को तुरंत निकटवर्ती अस्पताल ले जायें। ●

क्या आप जानते हैं?

❑ संकलन : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

असली नाम	विकल्पित नाम
1. बाल गंगाधर तिलक	लोकमान्य
2. जवाहर लाल नेहरू	चाचा जी, पंडित जी
3. सुभाष चन्द्र बोस	नेता जी
4. लाला लाजपत राय	पंजाब केसरी, शेर-ए-पंजाब
5. मदन मोहन मालवीय	महामना
6. रविन्द्रनाथ टैगोर	गुरुदेव
7. शेख मुजिबुर्रहमान	बंगबंधु
8. लाल बहादुर शास्त्री	शान्ति का मसीहा
9. चक्रवती राजगोपालाचार्य	राजा जी
10. सी.आर. दास	देशबन्धु
11. खान अब्दुल गफ्फार	बादशाह खान, फ्रंटियर गांधी
12. जयप्रकाश नारायण	लोकनायक

कहानी: अमर सिंह शौल (गाजियाबाद)

धूर्त लोमड़ी

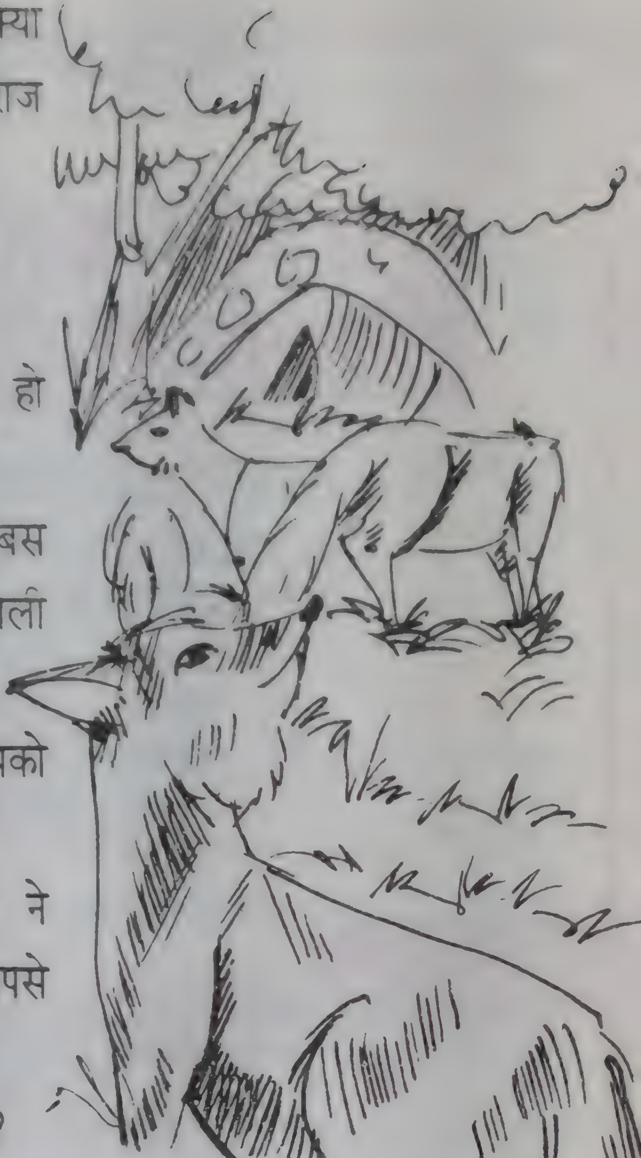
शांतिवन में चारों ओर सुख-शांति थी। जंगल के सभी प्राणी आपस में मिलजुलकर रहते थे। शांतिवन का राजा शेर बहुत दयालु, न्यायप्रिय और समझदार था। वह हमेशा इसी तरह शांति वन में सुख-शांति देखना चाहता था। राजा अपनी प्रजा से खुश था। तथा प्रजा अपने राजा से खुश थी।

एक दिन दूसरे जंगल से एक धूर्त लोमड़ी घूमते-घूमते शांतिवन में आ पहुँची। उसने देखा कि जंगल के सभी छोटे-बड़े प्राणी इकट्ठे एक ही तालाब में पानी पी रहे थे। ये मैं क्या देख रही हूँ? कहीं मेरी आँखें धोखा तो नहीं खा रही है। धूर्त लोमड़ी ने बड़ी गौर से देखते हुए अपने आप से कहा।

यह सब देखकर वह बड़ी हैरान थी। उसके मन में इच्छा पैदा हुई कि वह इस राज का पता जरूर लगा के रहेगी। आखिर इन सबका आपस में इकट्ठा



एक तालाब पर पानी पीने की वजह क्या है? वह लोमड़ियों के झुंड के पास इस राज का पता लगाने गई।



—सभी को मेरा राम-राम।

—राम-राम।

—तुम कौन हो? कहाँ से आई हो —एक लोमड़ी ने उससे पूछा।

—मैं पास वाले जंगल में रहती हूँ बस ऐसे ही आपके जंगल की तरफ घूमने चली आई—उसने जवाब दिया।

—अच्छा हुआ। कैसा लगा आपको हमारा शांतिवन?

—बहुत अच्छा—धूर्त लोमड़ी ने उसकी ओर देखते हुए कहा—मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूँ।

—पूछो, क्या पूछना चाहती हो?

—मैंने देखा कि जंगल के तालाब में सभी छोटे-बड़े प्राणी मिलकर इकट्ठे पानी पी रहे थे। क्या आप लोगों को अपने से बड़े जानवरों से डर नहीं लगता? धूर्त लोमड़ी ने उससे पूछा।

—डर किस बात का। यह शांतिवन है बहन यहाँ हर छोटा बड़ा प्राणी आपस में मिल-जुलकर रहता है। यहाँ कोई भी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता। यहाँ वन में चारों ओर सुख शांति है। —लोमड़ी ने उसे बताया।

—अच्छा! धूर्त लोमड़ी ने उसकी ओर देखा।

शांतिवन की सुख शांति को देखकर धूर्त लोमड़ी को जलन होने लगी। उसने अपने मन में ठान लिया। कि वह इस शांतिवन की सुख-शांति को भंग करके ही चैन की सांस लेगी चाहे कुछ भी हो।

—मैं यहाँ कुछ दिन आपकी मेहमान बनकर रहना चाहती हूँ अगर आप लोगों को कोई एतराज न हो तो। मुझे आपका यह शांतिवन बहुत अच्छा लगा—धूर्त लोमड़ी विनम्रता से बोली।

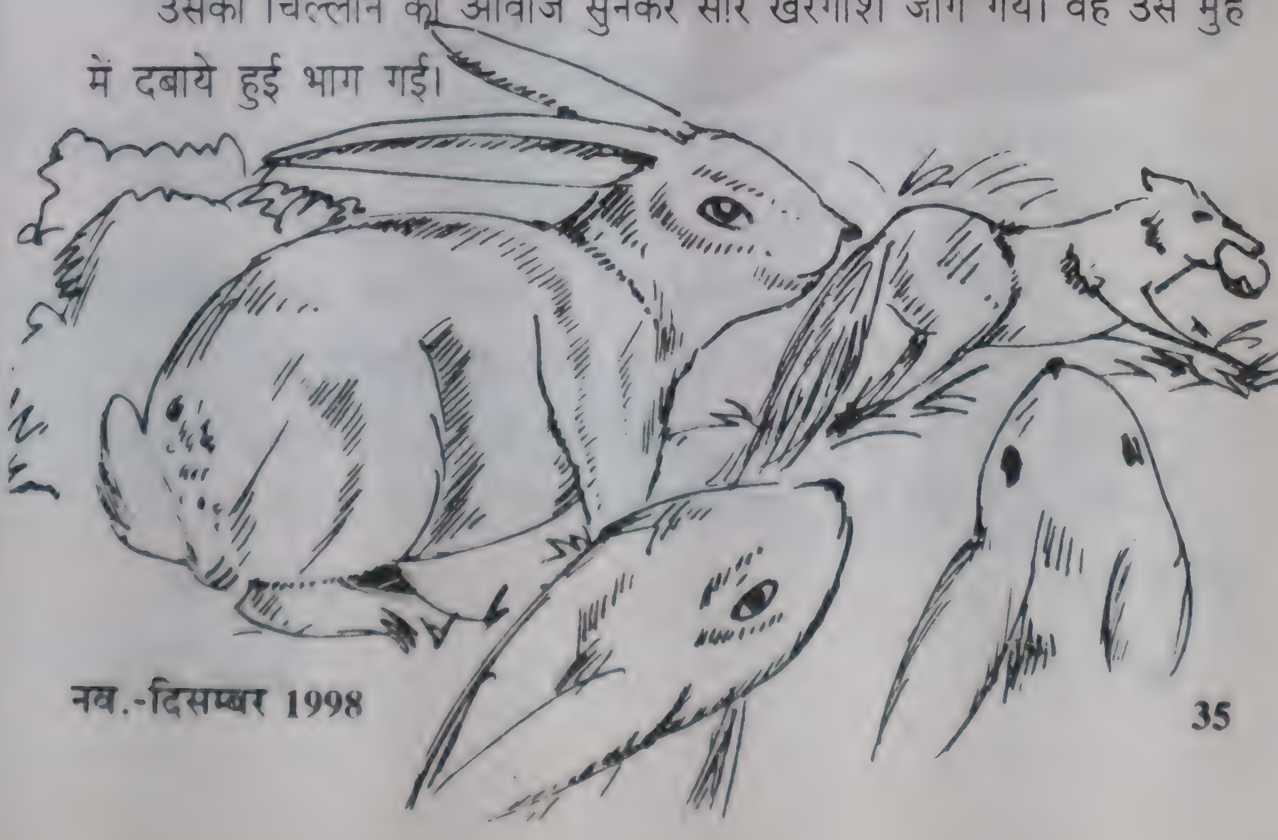
—ठीक है। आप यहाँ आराम से रह सकती हो। हमें कोई एतराज नही।—

सफेद छोटे-छोटे खरगोश हरी घास पर अपनी मस्ती में खेल रहे थे। उन्हें देख धूर्त लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया।

—अच्छा कितने प्यारे-प्यारे खरगोश हैं। दिल करता है पाँच-सात को इकट्ठा ही खा जाऊँ। बहुत दिन हो गये खरगोश खाये। हाय! क्या करूँ? यह शांति वन जो ठहरा। इन कम्बख्तों को सरेआम मार भी नहीं सकती—धूर्त लोमड़ी अपने आप से बोली।

धूर्त लोमड़ी ने दिन में उनका रहने का ठिकाना देख लिया। रात को लोमड़ियों का झुंड आराम से सो रहा था। वह चुपके से उठी। इधर-उधर देखा, सब आराम से सो रही हैं वह चुपके से दबे पाँव खरगोशों के ठिकाने की ओर चल दी। उसने देखा—सब खरगोश आराम से सो रहे हैं। वह इसी मौके की तलाश में थी। उसने चुपके से एक खरगोश उठाया और थोड़ी दूर जाकर उसको बड़े आराम से उसे खाया। एक खाने के बाद वह दोबारा वहीं गई। जैसे ही उसने दूसरे खरगोश को पकड़ा। वह जोर से चिल्लाया—बचाओ-बचाओ।

उसकी चिल्लाने की आवाज सुनकर सारे खरगोश जाग गये। वह उसे मुंह में दबाये हुई भाग गई।



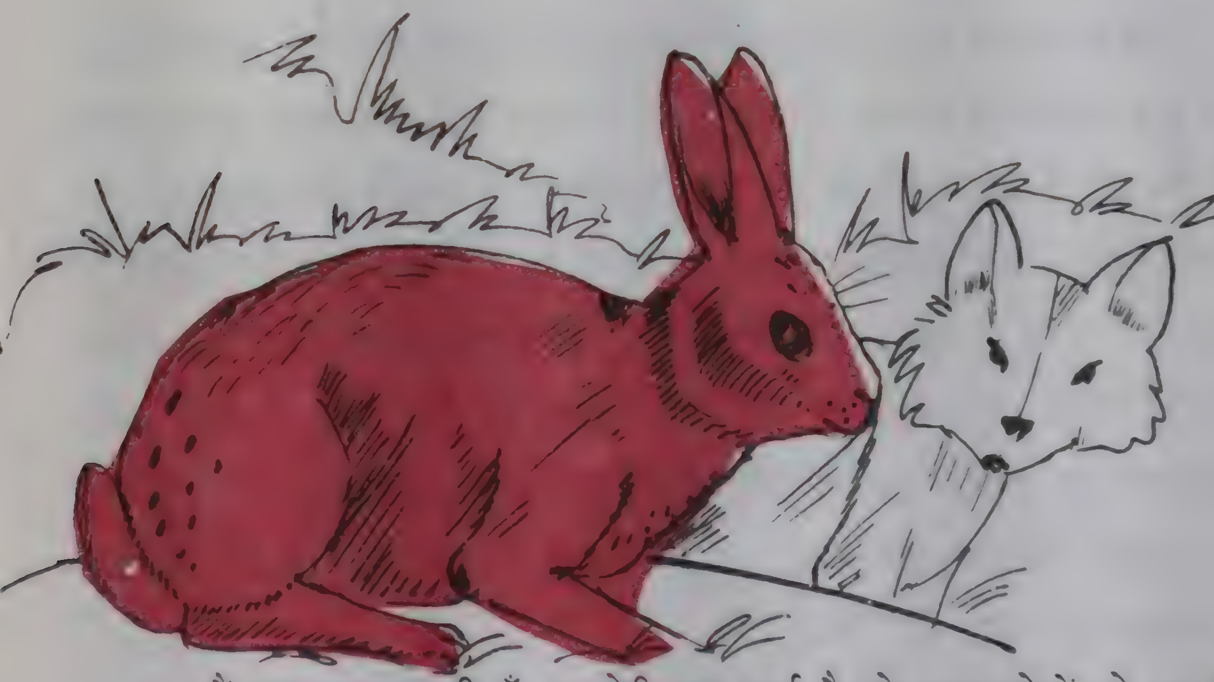
खरगोशों ने उसका पीछा किया। मगर उसे ढूँढ़ने में कामयाब नहीं हो सके।

खरगोश को मारकर वह उसे एक झाड़ी में छोड़ गई। जो लोमड़ियों के झुण्ड के निवास के पास थी। फिर वह आराम से जाकर झुंड में सो गई।

सुबह वह खरगोशों के पास गई। —तुम लोगों के चेहरे उदास क्यों हैं? धूर्त लोमड़ी ने पूछा।

—क्या बतायें कल रात कोई चीज हमारे दो साथियों को उठाकर ले गई।

—आज तक ऐसा हुआ नहीं। हमारी समझ में नहीं आ रहा कि ऐसा नीच काम करने वाला इस शांतिवन में कौन पैदा हो गया—एक बूढ़ा खरगोश दुःखी स्वर में बोला।



—मैं सब बता सकती हूँ। पर मेरी एक शर्त है जो आप लोगों को माननी पड़ेगी।—धूर्त लोमड़ी ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

—आप बतायें तो सही! वह कौन नीच है जिसने ऐसी नीच हरकत की।

—धूर्त लोमड़ी खरगोशों को वहाँ ले गई जहाँ खरगोश मरा पड़ा था।

—देखो, गौर से देखो। यही तुम्हारा साथी है न—धूर्त लोमड़ी ने कहा।

—हाँ, पर ये नीच काम किया किसने—बूढ़ा खरगोश उसकी ओर देखते हुए बोला।

(शेष पृष्ठ 53 पर)

कविता : दिनेश 'दर्पण'

पेड़

झूम-झूमकर गाते पेड़,
रुन-झुन गीत सुनाते पेड़
शुद्ध हवा देते हैं सबको
प्रदूषण दूर भगाते पेड़
हवा जब तेज चलती है।
आपस में बतियाते पेड़
फल फूल औषधि देकर
जीवन सफल बनाते पेड़
आँखों को ठंडक पहुँचाकर
हरियाली फैलाते पेड़
बादलों को आकर्षित कर
वर्षा खूब कराते पेड़
आदिकाल से सेवा करते
फिर भी क्यों कट जाते पेड़
'परहित सरिस धरम नहिं भाई'
बात यही बतलाते पेड़।



कविता : गफूर "स्नेही"

नीम

बड़े काम का नीम
छोटा मोटा हकीम
पत्तों का मंजन बने।
फूलों का अंजन बने।
लकड़ी छाल से दवाएं
चर्म रोग को भगाए।
फल में गुण भरे हुए।
करे सफा लीख-जुएं।
गरमी में तो आइसक्रीम सा
बड़े काम का नीम।



कहानी : विनय जोशी चित्र : मनु




मित्रों के बीच-
क्यों फिटिंग ठीक है न, मैंने...
बस कर - पूसी, बस कर। यह मत कहना मैंने खुद सीया है इसे...


स्कूल में फूलों के गुलदस्ते बनाने की प्रतियोगिता की घोषणा हुई-
पूसी तुम्हें प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए चुना जा रहा है कल जरूर आना! पिछली बार तुम नहीं आई थी!
ठीक है मैडम!


प्रतियोगिता शुरू हुई। शेष बच्चों के पास पूरी सामग्री है पर-
पूसी के पास चार फूल हैं-
सबके गुलदस्ते तैयार होने को हैं, तुम अभी तक धागे से उलझ रही हो। पूसी जल्दी करो!
कुछ देर बाद ही-
लीजिये मैडम!
घण्टे भर से तो तुम कुछ भी न कर पाई! और अब एकदम सबसे पहले....


मैडम! पूसी मेरा गुलदस्ता उठा लाई है! मुझसे कहा-खबरदार शोर मचाया तो... खा जाऊँगी!
पूसी! झूठी कहीं की! हर काम में झूठ बोला है तुमने तुम तो कुछ नहीं सीख पाई हो! आज तक बहाने बनाए हैं तरह-तरह के!
सॉरी मैडम! अब कभी झूठ नहीं बोलूंगी!

कविताः कु. अंशु शुक्ला

सड़क



ऊँची-नीची टेढ़ी-मेढ़ी
संकरी चौड़ी बनी सड़क।
सब पथिकों को राह दिखाती,
प्रीत करे यह घनी सड़क।

शहरों में यह पक्की होती,
और गाँव में कच्ची।
पर मंजिल तक है पहुँचाती,
बुढ़िया हो या बच्ची।

मोटर गाड़ी रिक्शा तांगा,
इस पर दौड़ लगाते हैं।
लेकिन जल्दी के चक्कर में,
कभी-कभी टकराते हैं।

कहती सड़क ध्यान दो मुझपर
सुनो खोलकर कान।
ज्यादा जल्दी के चक्कर में
जा सकती है जान।



अपनी



दुनिया



अपनी



दुनिया



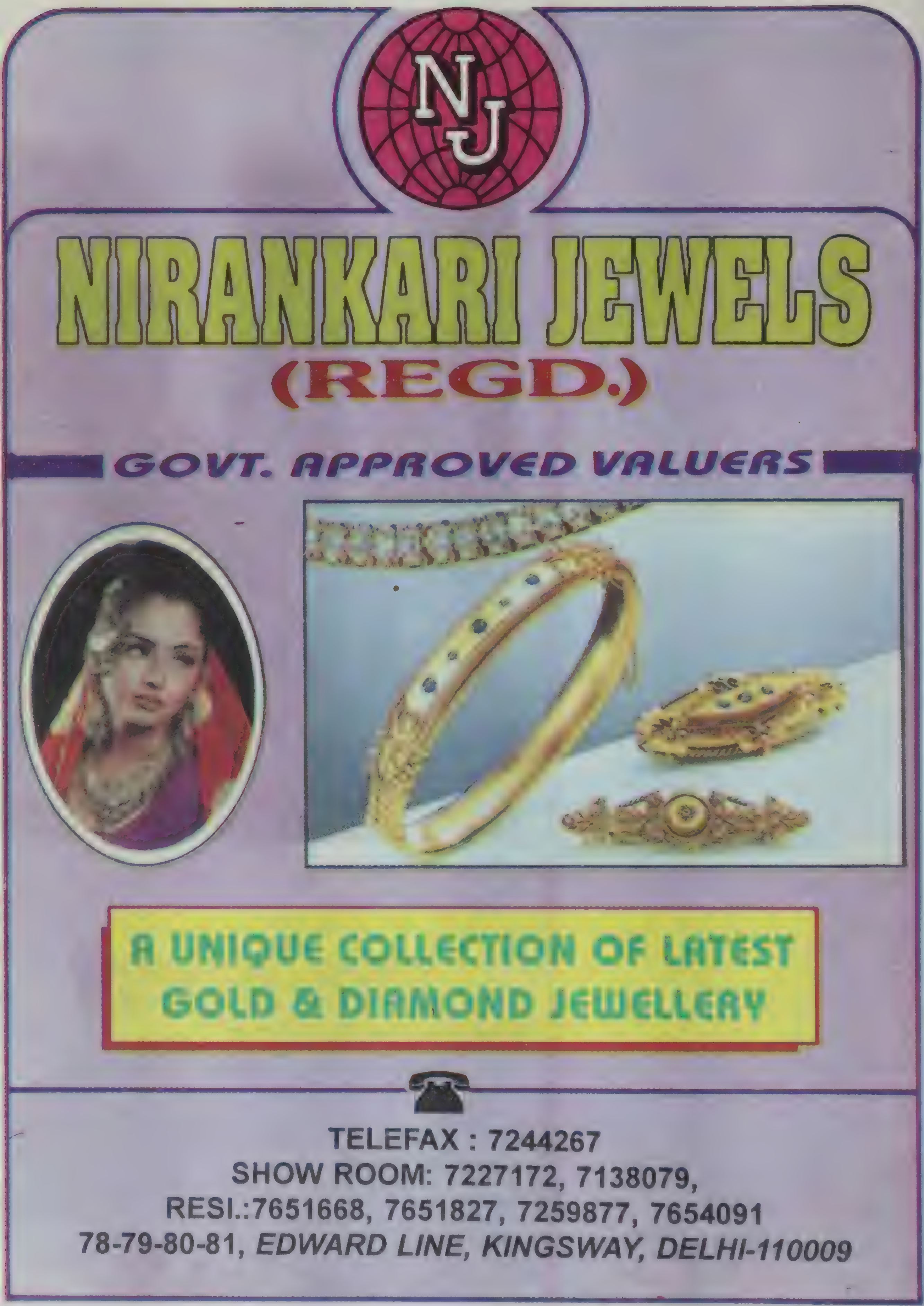
कविताः मोहम्मद साजिद खान

पापा



हमको बहुत है भाते पापा,
हरदम खूब हंसाते पापा।
जब मैं रोता तब आ करके
मीठा गीत सुनाते पापा।
अगर नहीं माना तब भी मैं,
ढेर खिलौने लाते पापा।
छुट्टी का दिन हो तो चिड़ियाघर
की सैर कराते पापा।
लड्डू, बर्फी, पेड़ा, खुरमा,
रोज शाम ले आते पापा।
भोजन करते हमें बुलाते,
नहीं अकेले खाते पापा।
पर अनुशासन के पक्के हैं,
अच्छी बात सिखाते पापा।




NJ
NIRANKARI JEWELS
(REGD.)
GOVT. APPROVED VALUERS
A UNIQUE COLLECTION OF LATEST
GOLD & DIAMOND JEWELLERY
TELEFAX : 7244267
SHOW ROOM: 7227172, 7138079,
RESI.:7651668, 7651827, 7259877, 7654091
78-79-80-81, EDWARD LINE, KINGSWAY, DELHI-110009

(पृष्ठ 36 का शेष) धूर्त लोमड़ी

— लोमड़ियों ने। —धूर्त लोमड़ी ने कहा।

— हम कैसे विश्वास करें कि यह नीच काम उन्होंने ही किया हो—बूढ़े खरगोश ने उसकी ओर देखा।

—क्या आप लोगों को इस मरे हुए खरगोश को देखकर भी विश्वास नहीं हो रहा?

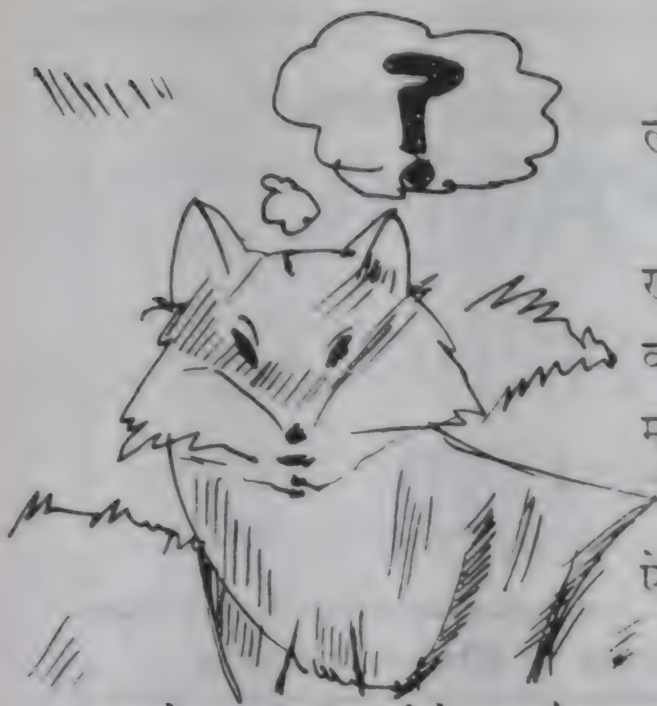
जो लोमड़ियों के झुंड के पास मरा पड़ा है। मैंने लोमड़ियों को बोलते हुए अपने कानों से सुना है कि वे बेर खाती-खाती परेशान हो गई हैं। अब खरगोशों को अपना भोजना बनाया करेगी—धूर्त लोमड़ी ने कुटिलता से मुस्कराते हुए कहा।

—इसका मतलब यह हुआ कि अब हमें लोमड़ियों से सावधान रहना चाहिए। वे कभी भी हमारे ऊपर हमला कर सकती हैं। —बूढ़ा खरगोश बोला।

खरगोशों को उसकी बातों पर पूरा विश्वास हो चुका था।

—हाँ, आप लोगों को उनसे सावधान रहना चाहिए। उसने उन्हें हिदायत दी। धूर्त लोमड़ी ने खरगोशों के दिल में लोमड़ियों के प्रति दहशत पैदा कर दी। इसके बाद धूर्त लोमड़ी लोमड़ियों के पास पहुँची व पासा फैंकते हुए बोली—तुम ये मरा हुआ खरगोश देख रही हो। कल रात बाघ ने खरगोशों के झुंड पर हमला करके बहुत सारे खरगोशों को खा लिया। पता है वह क्या कह रहे थे? धूर्त लोमड़ी उनसे बोली।





—क्या कह रहा था?—एक लोमड़ी ने पूछा।

—वह कह रहा था कि वह घास खाते-खाते परेशान हो चुका है। अब वह अपने से छोटे सभी जानवरों को मारकर खूब मज़े से खाया करेगा।

—ये तुम क्या कह रही हो? बाघ ऐसा नहीं कर सकता।

—क्या आप लोगों को ये मरा हुआ खरगोश नहीं दिखाई दे रहा है। आज उसने खरगोशों पर हमला किया है। कल वह आप लोगों पर भी करेगा।

—हम सबको उससे सावधान रहना चाहिए—एक लोमड़ी बोली।

—हाँ, तुम सब लोगों को उससे सावधान रहना चाहिए।—धूर्त लोमड़ी ने लोमड़ियों के दिल में बाघ के प्रति दहशत पैदा कर दी। लोमड़ियों ने उसकी बात को सच मान लिया।

धूर्त लोमड़ी अब मरे हुए खरगोश को लेकर बाघ के पास ले गई।

—राम-राम —बाघ मामा।



—राम-राम—बाघ ने उसकी ओर देखते हुए कहा—ये क्या है?

—मामा जी, मत पूछो ये क्या है?—धूर्त लोमड़ी ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

—इन बेचारों पर कल रात शेर ने हमला किया था। बहुत सारे खरगोशों को चट कर गया।

—ये तुम क्या कह रही हो? तुम्हारा

दिमाग खराब तो नहीं हो गया। हमारा राजा दयालु है। वह तो शाकाहारी ठहरा—बाघ ने उसकी ओर हैरानगी से देखा।

—क्या तुम्हें इस मरे हुए खरगोश को देखकर विश्वास नहीं हो रहा। मैंने शेर को अपने कानों से बोलते हुए सुना है कि वह घास खाते-खाते परेशान हो चुका है। अब खूब मजे से शांतिवन के प्राणियों को खाया करूंगा। —धूर्त लोमड़ी ने बताया।

—फिर तो हमें उस निर्दयी शेर से सावधान रहना चाहिए।

—बाघ को लोमड़ी की बात पर पूरा विश्वास हो चुका था।

धूर्त लोमड़ी शांतिवन की शांति में आग लगाने में कामयाब हो गई थी। वह अपनी चाल की कामयाबी पर बहुत खुश हो रही थी।

एक दिन वनराज-तालाब के पास वाली झाड़ी में बैठा हुआ आराम कर रहा था। उसने देखा कि खरगोश लोमड़ी को देखकर भाग गये। लोमड़ी बाघ को देखकर। माजरा उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसने बाघ से पूछना चाहा तो जवाब देने के बजाए वह भी उलटा नौ-दो ग्यारह हो गया। शेर यह सब देखकर परेशान हो गया।

शेर अपनी गुफा के बाहर बैठा सोच में डूबा हुआ था। उनका सलाहकार बूढ़ा बंदर वहाँ आया।

—महाराज प्रणाम।

—वनराज कुछ नहीं बोला।

—किस सोच में डूबे हैं महाराज। परसों आपका जन्मदिन है। अभी तक कोई तैयारी नहीं हुई।

—क्या करेंगे हम अपना जन्मदिन मनाकर—शेर ने दुखी स्वर में कहा।
समझ में नहीं आता इन शांतिवन के प्राणियों को क्या हो गया?

—क्या हो गया महाराज—बंदर ने पूछा।

—वनराज ने बंदर को पूरी कहानी बताई जो उसने तालाब पर देखी थी।

—समस्या बहुत गम्भीर है। पर आप चिंता न करें महाराज! मैं इसका पता



जल्दी ही लगा के रहूँगा—बंदर ने वनराज को आश्वासन देते हुए कहा।

बंदर ने शांति वन के सभी प्राणियों से पूछा तो उन्होंने नई लोमड़ी का नाम बताया। बंदर समझ गया कि यह सब उस नई लोमड़ी की चाल है।

—महाराज प्रणाम! मैंने पता लगा लिया। यह किसकी करामात है—बन्दर बोला।

—कौन है वो। हम उसके बारे में जानना चाहते हैं।

—महाराज! हमारे वन में एक नई लोमड़ी आई है। वह यहाँ मेहमान बनकर रह रही है। यह सब आग उसकी लगाई हुई है। —बंदर ने वनराज को बताया।

—यही तो हम भी सोच रहे थे कि यह काम किसी बाहर वाले का ही हो सकता है। हमारे शांतिवन का कोई भी प्राणी ऐसा नीच काम नहीं कर सकता। ये तो हमें पूर्ण विश्वास था।

—अब क्या हुक्म है महाराज?

—उसे पकड़कर हमारे पास ले आओ। हम उसे ऐसी सजा देंगे कि वह भी याद करेगी—वनराज ने बंदर को हुक्म देते हुए कहा।

—जो आज्ञा महाराज।

—लो महाराज! यही वह धूर्त लोमड़ी है।—बंदर बोला।

—इसे लोहे के पिंजरे में बन्द कर दो। —वनराज ने बंदर से कहा।

—जो आज्ञा महाराज।—बन्दर ने उसे पिंजरे में बन्द कर दिया।

—जाओ सारे शांतिवन में जाकर घोषणा कर दो कि कल हमारा जन्मदिन

है। हमारे जन्मदिन में शांतिवन के सभी प्राणी शामिल हों। साथ में इसकी करतूत को भी बता देना।

बंदर ने सारे शांतिवन में वनराज के जन्मदिन की घोषणा कर दी तथा साथ में शांतिवन के सभी प्राणियों को धूर्त लोमड़ी की करामात के बारे में बता दिया।

दूसरे दिन वनराज का जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शांतिवन के सभी प्राणियों ने निर्भय होकर वनराज के जन्मदिन में बढ़-चढ़कर के हिस्सा लिया। खूब माल और मिठाइयाँ बाँटी गई।

उस मक्कार लोमड़ी को हमारे सामने पेश किया जाये—वनराज ने बंदर से कहा।

—जो आज्ञा महाराज—बंदर ने लोमड़ी से पिंजरे के साथ वनराज के सामने पेश किया।



—बाघ तुम्हें हुक्म दिया जाता है कि इस धूर्त लोमड़ी का काम तमाम कर दो। वनराज बाघ से बोले।

—जो आज्ञा महाराज—वनराज का हुक्म पाते ही बाघ ने अपने तेज पंजों से उसका काम तमाम कर दिया।

—अगर तुम लोग सुख-शांति से रहना चाहते हो तो कभी भी दूसरों के बहकावे में मत आओ। समझे—वनराज ने कहा।

शांतिवन में अब चारों ओर खुशी की लहर दौड़ रही थी। ●

मोर

देखो, नाच रहा है मोर
उंक पीहू करता है शोर
रंगबिरंगे पंखों वाला
राष्ट्रीय पक्षी कहलाता मोर



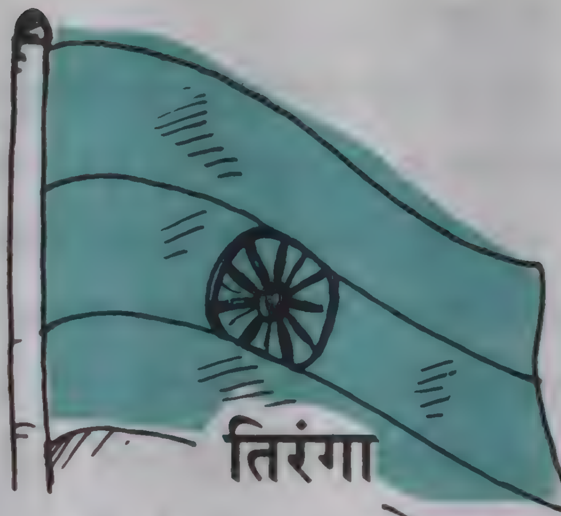
रेल

छुकछुक कर आती हूँ
मुन्नी को बिठलाती हूँ
दूर दूर की सैर कराती हूँ
रेल मैं कहलाती हूँ।



राजा

खेतों का मैं राजा
पटपट बाजे बाजा
डीजल मेरा है खाजा
ट्रेक्टर हूँ मैं माजा।



तिरंगा

संघर्ष और मेहनत का है गीत तिरंगा
आजादी और एकता का प्रतीक तिरंगा
गांधी, चाचा, रानी-झांसी और वीरों के
अनुपम जीवन का है ये मीत तिरंगा।



ट्रक

खूब भरो मुझ पर माल
दौड़ लगाकर जाता ताल
रंग मेरा है पीला लाल
ट्रक हूँ मैं चलता पूरे साल।



लेखः लाल सिंह 'लाल' (दिल्ली)

उत्तरायण और दक्षिणायन

आनन्द अपने दादा जी की चारपाई पर उन्हीं के साथ सोने की जिद्द कर रहा था; लेकिन उसके दादा जी उसे अपने साथ सुलाना नहीं चाह रहे थे। उन्हें भय था कि यह खाँसी की नामुराद बीमारी कहीं उनसे उनके पोते को न लग जाये। परन्तु बाल-हठ के सामने उनकी एक न चली और आनन्द खुले आसमान के नीचे बिछी चारपाई पर धम्म से लेट गया। दादा जी ने बड़े प्यार से आनन्द के सिर पर हाथ फेरा और उसे प्यार से दुलारने लगे।

अचानक आनन्द ने एक प्रश्न दादा जी से ठोक दिया—दादा जी! आपने मुझे एक दिन महाभारत की कथा सुनाई थी। मुझे उसमें एक बात समझ नहीं आयी थी कि दादा भीष्म छः महीने तक बाणों की शैय्या पर क्यों लेटे रहे?

दादा जी बोले—आनन्द यह हमारा देश भारत बड़ा महान देश है। इसमें अनेकों सभ्यताएं एक साथ पल रही हैं, बढ़ रही हैं। उनकी अपनी-अपनी आन व शान है। और मान्यताएँ भी हैं। इसी प्रकार आर्य सभ्यता की एक मान्यता है कि जो भी आदमी उत्तरायण काल में शरीर का त्याग करेगा वह सीधा स्वर्ग में जायेगा। बस इसीलिए उन्होंने अपना शरीर नहीं छोड़ा और एक लम्बी अवधि तक बाणों से बनी शैय्या पर लेटे रहे। अन्त में उत्तरायण काल आने पर उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।



आनन्द बोला—दादा जी आपने तो मुझे और उलझा दिया है।

दादा जी—बैटे कैसे?

—दादा जी, अब मुझे आप यह बताइये कि यह उत्तरायण काल क्या होता है?

दादा जी अपने पौत्र के प्रश्न से प्रसन्न हुए और बोले—आनन्द मैं तुझे आज उत्तरायण काल ही नहीं दक्षिणायन काल भी समझाऊंगा। मेरी बात सुनते-सुनते तू सो नहीं जाना।

आनन्द—दादा जी पहले कभी बात करते-करते मैं सोया हूँ जो आज सो जाऊँगा।

दादा जी— एक दिन मैंने तुझे बताया था कि जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं उसकी दो गतियाँ हैं, दैनिक गति और दूसरी वार्षिक गति।

आनन्द—दादा जी, वार्षिक गति से क्या प्रभाव पड़ता है। साफ-साफ समझाइये।

—आनन्द वार्षिक गति के कारण पृथ्वी पर दिन-रात छोटे-बड़े होते हैं और ऋतुओं में परिवर्तन होता है।

—और दैनिक गति से—आनन्द ने रुचि लेते हुए पूछा।

पृथ्वी की दैनिक गति को इसकी परिभ्रमण गति भी कहते हैं। गति से दिन-रात बनते हैं—दादा जी बोले।

—दादा जी! पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने होता है वहाँ सूर्य के प्रकाश के कारण दिन होता है। और जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच रहा होता है उसे रात कहते हैं क्योंकि सूर्य के प्रकाश के अभाव में वहाँ पर छाया हो जाती है।

दादा जी खुश होते हुए बोले, आनन्द तू बड़ा समझदार हो गया है।

आनन्द—पोता किसका हूँ।

—आनन्द यह पृथ्वी अपनी कल्पित धूरी पर घूमती हुई भी अपने वार्षिक मार्ग पर लगातार दौड़ रही है। अपनी कल्पित धूरी पर यह लम्बवत् नहीं है बल्कि सूर्य की ओर साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है।

—दादा जी ये विषुवत रेखा क्या है?

—आनन्द तू जल्दी बहुत करता है। सुन विषुवत रेखा को प्रधान ''मध्याह्न रेखा' भूमध्य रेखा नामों से भी पुकारा जाता है। यह पृथ्वी को दो बराबर गोलार्द्धों में बाँटती है।

—हाँ दादा जी एक को दक्षिणी गोलार्द्ध और दूसरे को उत्तरी गोलार्द्ध कहते हैं।

—हाँ बेटे, इस पृथ्वी पर भूगोलविदो ने दो प्रकार की रेखाएँ कल्पित की हैं जिन्हें समानान्तर और देशान्तर रेखाएँ कहते हैं और प्रधान देशान्तर रेखा इंगलैंड में ग्रीनविच नगर से आरम्भ होती है।

—दादा जी ये रेखाएँ उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाती हैं। और इनकी संख्या तीन सौ साठ है।

—हाँ आनन्द। परन्तु समानांतर रेखाओं की संख्या एक सौ अस्सी है। याद रखना भूलना नहीं और प्रधान समानांतर रेखा या विषुवत रेखा दक्षिणी अमेरिका के अमेजन नदी अफ्रीका के काँगो नदी क्षेत्र और लंका के नीचे से तथा आस्ट्रेलिया के ऊपरी भाग से गुजरती है।

—दादा जी, उलझाओ मत सीधा-सीधा बताओ कि उत्तरायण और दक्षिणायन क्या होता है?

—बेटे उतावले मत बनो। नींद आ रही हो तो सो जाओ।

—दादा जी! सोऊँगा तो आज जानकर ही।

—तो ध्यान से सुनो बेटे। अभी-अभी आनन्द तूने मुझे बताया था कि गोलार्द्ध दो हैं—उत्तरी ग़ोलार्द्ध और दक्षिणी गोलार्द्ध। उत्तरी गोलार्द्ध में एक रेखा और है जो विषुवत रेखा से ठीक 23.5 अंश पर है। इसका नाम है कर्क रेखा। क्या नाम बताया मैंने?

कर्क रेखा—आनन्द बोला। दादा जी सोया नहीं हूँ और ना ही सोऊँगा।

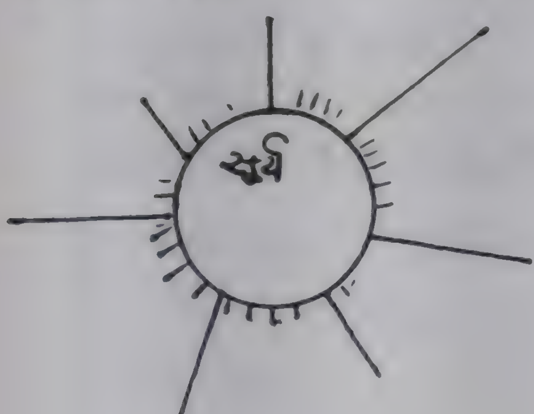
अच्छा! ठीक इसी प्रकार दक्षिणी गोलार्द्ध में एक रेखा है जिसका नाम है मकर रेखा यह भी विषुवत रेखा से 23.5 पर स्थित है।

—अच्छा बेटे सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं या तिरछीं?

—दादा जी सीधी पड़ती हैं यह भी कोई सवाल है?

आनन्द ज्यादा होशियार मत बन। अब और ध्यान से सुन पृथ्वी के अपने अक्ष पर झुके होने के कारण ये कर्क और मकर रेखाएं सूर्य से वार्षिक गति एवं दैनिक गति के कारण अलग-अलग दूरी बनाती हैं।

इक्कीस जून को सबसे बड़ा दिन होता है और फिर छोटा होना शुरू हो जाता है। जब सूर्य रश्मियाँ तिरछी होने लगती हैं तो दिन भी शनैः-शनैः छोटे होते जाते हैं। और कर्क रेखा से सूर्य की किरणें तिरछी होते-होते 22 दिसम्बर को सबसे छोटा दिन बनाती हैं। इसी प्रकार 23 दिसम्बर से फिर दिन बड़ा होना शुरू हो जाता है और 21 जून तक बड़ा होता रहता है। अतः 23 दिसम्बर से 21 जून तक उत्तरायण काल कहलाता है और 22 जून से 22 दिसम्बर तक का काल दक्षिणायन काल कहलाता है।





—दादा जी, अब समझ में आया कि यह सब सूर्य की किरणों का कमाल है।

हाँ बेटे, अब तू अपने बिस्तरे पर जाकर सो जा। मुझे भी नींद आ रही है। सुबह को जल्दी उठना है जिससे स्वास्थ्य ठीक रहे।

दादा जी मास्टर जी कह रहे थे कि 'जो जल्दी सोये, जल्दी जागे, वह जीवन की दौड़ में सबसे रहे आगे'—आनन्द बोला।

ठीक है, अच्छा बेटे अब सो जाओ।

नन्हाँ तबलावादक: ओजस

ओजस एक ऐसा विलक्षण बालक है जिसने मात्र सात महीने की आयु में तबले पर थाप दी। एक वर्ष की आयु में अध्ययन आरम्भ किया और चार वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते एक कुशल तबला वादक के समान उस्तादों के साथ मंच पर इसने अपनी कला का प्रदर्शन आरम्भ कर दिया।

ओजस का जन्म 8 नवम्बर 1987 को महाराष्ट्र के अकोला जिले में आकोट नामक स्थान पर एक प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न परिवार में हुआ था। ओजस के पिता डा. योगेश चिकित्सक होने के साथ संगीत का भी शौक रखते थे।

एक बार एक पार्टी में संगीत कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद सभी लोग बैठे गपशप कर रहे थे कि अचानक उनकी दृष्टि सात माह के ओजस पर पड़ी। ओजस बड़ी तन्मयता से तबले पर हाथ मार-मार कर खुश हो रहा था। वह अपनी मम्मी श्वेता लीना की गोद से उतरकर घुटने के बल चलता हुआ तबले के पास पहुँच गया था। सभी ने इसे ओजस का बचपना समझा और उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। एक दो लोगों ने डा. योगेश की तरफ इशारा करते हुए इतना अवश्य कहा कि डाक्टर साहब लगता है, आपका बेटा बड़ा होकर बहुत बड़ा तबला वादक बनेगा।

डा. योगेश ओजस को बहुत चाहते थे। एक दिन वह उसके लिए छोटी सी ढोलक ले आये। बालक ओजस के मन में जब आता, ढोलक बजाता उसके साथ खेलता भी। लेकिन वह अपनी ढोलक बहुत सम्भाल कर रखता था।

एक दिन डा. योगेश अपने कमरे में बैठे कुछ पढ़ रहे थे, कि अचानक उनके कानों में तबले की थाप की सी आवाज़ सुनाई पड़ी। उन्हें ऐसा लगा मानो कोई सधे हाथों से तबला बजा रहा हो। डा. योगेश बाहर निकले तो देखा ओजस अपनी छोटी-सी ढोलक उसी तन्मयता से बजा रहा था जैसे उनके मित्र के घर पर बजा रहा था, किन्तु उस समय उसके चेहरे पर बाल सुलभ चंचलता के स्थान पर गम्भीरता थी।

डा. योगेश स्वयं एक अच्छे तबला वादक थे। उन्होंनें ओजस में छिपी प्रतिभा को पहचाना और उसी दिन उसके लिए एक तबला खरीद लाये। इतना ही नहीं, उन्होंनें ओजस के लिए एक संगीत शिक्षक की व्यवस्था भी कर दी।

गुरू श्री पलसकर की मेहनत और ओजस की प्रतिभा रंग लाई तथा कुछ ही महीनों में ओजस ने तबलावादन की प्राथमिक जानकारी ही हासिल नहीं कर ली बल्कि उसकी बारीकियों से भी परिचय प्राप्त कर लिया और झपताल, कहरवा, दादरा आदि पर तबला वादन करने लगा। ओजस अपने घर पर ही तबला वादन का अभ्यास करता था किन्तु उसकी ख्याति पूरे आकोट में फैल चुकी थी। बहुत से संगीत प्रेमी घर आकर उसकी प्रतिभा के दर्शन कर चुके थे।

एक बार आकोट के बिलबिले हाल में एक संस्था द्वारा संगीत का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण था ओजस। चार वर्षीय ओजस रंगमंच पर प्रौढ़ संगीतकारों के मध्य बैठा तबले पर संगत कर रहा था। सभागृह पूरी तरह भरा था। सर्वप्रथम तुलसी दास जी का एक भजन गाया गया—ठुमक चलत रामचन्द्र... इस पर ओजस ने इतनी अच्छी संगत की कि लोग वाह-वाह कर उठे और भजन समाप्त होते ही सभागृह तालियों से गूँज उठा।

इस कार्यक्रम के बाद तो ओजस का नाम पूरे महाराष्ट्र में चर्चा का विषय बन गया और उसे अनेक संगीत समारोहों में आमंत्रित किया जाने लगा।

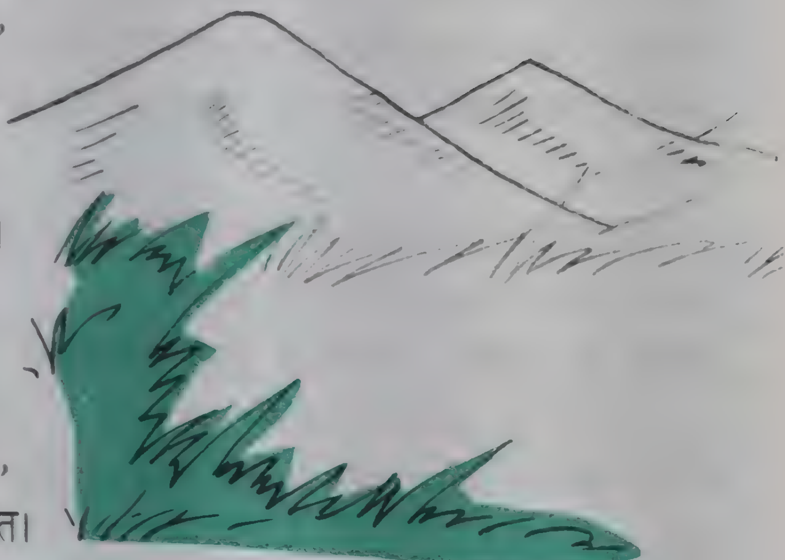
ओजस को न जाने कितनी संस्थाएं सम्मानित कर चुकी हैं और पुरस्कार दे चुकी हैं। आकाशवाणी अकोला ने भी ओजस पर बीस मिनट का कार्यक्रम तैयार किया था जिसे 8 मई 1992 को प्रसारित किया जा चुका है।

ओजस एक बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न बालक है। उसे यदि इसी प्रकार अनुकूल परिवेष और सुयोग्य मार्गदर्शन मिलता रहा तो निश्चित रूप से एक दिन वह बहुत बड़ा संगीतकार बनेगा।

सहज व सरल जीवन व्यक्ति को कुण्ठा, क्रोध व झूठ से बचाकर रखता है।

पर्वत

बड़ी शान से रहता पर्वत
झुकना कभी न सहता पर्वत।
स्वाभिमान उसका अपना है,
अड़ना हमें सिखाता पर्वत।
ऊपर से कठोर लगता है,
भीतर रस बरसाता पर्वत।
झरने नदियाँ पैदा करता,
सबकी प्यास बुझाता पर्वत।
सैर कराता, मन को भाता,
'मस्त रहो' यह कहता पर्वत।





पानी

चुनमुन चिड़िया माँगे पानी,
सूखी धरती माँगे पानी।
पेड़ और पौधे भी कहते,
मेघा दादा, दे दे पानी।
मोर मेघ की प्रीति पुरानी
वह भी हरदम माँगे पानी,
पपीहा भी रट खूब लगाता,
दे दे पानी, दे दे पानी
मेघा भी तब दौड़ लगाता,
कहता सबसे ले लो पानी।

समाचार

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के रहस्य खोलने वाला डिटेक्टर

परमाणु अनुसंधान से जुड़े देश के प्रमुख संगठनों में माने जाने वाले संगठनों साहा इंस्टीच्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स तथा वैरिएबल एनर्जी साइक्लोट्रॉन सेंटर' ने एक ऐसा परमाणु संसूचक (Nuclear Ditector) विकसित किया है जो करोड़ों वर्ष पूर्व ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से 'महाविस्फोट' के बाद की घटनाओं के बारे में तमाम महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध कराएगा।

इस संसूचक को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों के सहयोग से बनाया गया है। यह अपनी तरह का पहला संसूचक है।

आदर्श सेन आनन्द : भारत के मुख्य न्यायाधीश

न्यायमूर्ति श्री आदर्श सेन आनन्द को भारत का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। 62 वर्षीय श्री आनन्द भारत के 29वें मुख्य न्यायाधीश हैं। वे इस पद पर तीन वर्षों तक रहेंगे।

अमर्त्य सेन को नोबेल पुरस्कार

समाज के निर्धनतम व्यक्तियों को पीड़ित करने वाली दैवी आपदाओं को केन्द्र में रखकर आर्थिक अनुसंधान करने वाले, महान भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन को इस वर्ष अर्थ शास्त्र के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

श्री अमर्त्य सेन ने राजनीति विज्ञान और दर्शन शास्त्र को एक साथ रखते हुए भूख, विकास, कल्याण और असमानता जैसे विषयों पर अग्रणी कार्य करके अर्थशास्त्र को एक नया नैतिक आयाम दिया है।

रॉयल स्वीडिश अकादमी ऑफ साइंस ने इस निर्णय की घोषणा करते हुए कहा है—डॉ. सेन के अग्रणी कार्य से दुर्भिक्ष और गरीबी के लिए उत्तरदायी आर्थिक प्रक्रियाओं की हमारी समझदारी में वृद्धि हुई है।

यह विश्व का सर्वोच्च माना जाने वाला पुरस्कार है, जिसकी राशि 7.6 मिलियन स्वीडिश क्रोनर (9,63,000 अमेरिकी डालर) है। श्री सेन यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले 6वें भारतीय हैं) उनसे पूर्व गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर, वैज्ञानिक सी.वी. रमन, हरगोबिन्द खुराना, सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर तथा मदर टेरेसा यह पुरस्कार पाने वाले भारतीय रहे हैं।

दिल्ली की प्रदूषण समस्या का समाधान

भारत की राजधानी दिल्ली निरन्तर प्रदूषित शहरों की सूची में आगे बढ़ रही है। प्रदूषण के कारण अनेक रोगों ने इसे अपनी चपेट में ले रखा है।

इंडियन नैशनल साइंटफिक डाक्यूमेंटेशन सेंटर (इंस्डाक) के निदेशक प्रो. टी. विश्वनाथन का कहना है कि दूरसंचार तथा कंप्यूटर संजाल ही दिल्ली की वाहन प्रदूषण समस्या तथा इसके परिणाम स्वरूप होने वाले रोगों का निदान है। उनका कहना है कि दिल्ली के 30% तक कर्मचारी अपने घरो में बैठकर ही कंप्यूटरों के जरिए अपने कार्यालयी दायित्व का अधिक प्रभावी ढंग से निर्वाह कर सकते हैं। इस स्थिति में मानव श्रम घंटों की भी बचत होगी, जो कि फिलहाल बसों की प्रतीक्षा में व्यर्थ होती है। उनका कहना है कि दिल्ली तथा अन्य महानगरों की सड़कों पर बढ़ता संकरापन तथा उन पर वाहनों के बढ़ते हुए बोझ को देखते ुए कंप्यूटर संजालों के जरिए प्रदूषित सड़कों पर सफर के दैनिक तनाव से तो बचा ही जा सकेगा वहीं कार्यक्षमता तथा सूचनाओं तक पहुँच भी बढ़ेगी।

विश्व मास्टर्स पावरलिफ्टिंग चैम्पियनशिप

अर्जेन्टीना में पिछले दिनो आयोजित विश्व मास्टर्स पावरलिफ्टिंग चैम्पियनशिप में भारत ने 1 स्वर्ण, 4 रजत व 5 कांस्य पदक जीते हैं। एक मात्र स्वर्ण पदक व तीन रजत पदक श्री रमेश सूरति ने जीते। 110 कि. ग्रा. वर्ग की डेडलिफ्ट स्पर्धा में 295 कि. ग्रा. वजन उठाकर श्री निर्मल जीत सिंह ने भारत के लिए चौथा रजत पदक जीता। कांस्य पदक, श्री जी. एस. मांजरेकर ने 4 तथा श्री फूल सिंह ने 1 जीता।

जर्मनी व नामीबिया में महात्मा गाँधी के नाम पर मार्ग

अहिंसा व प्रेम के पुजारी महात्मा गाँधी के नाम पर जर्मनी व नामीबिया में मार्गों का नाम करण किया गया है।

जर्मन सरकार ने महात्मा गाँधी की 50वीं पुण्य तिथि को यादगार बनाने के लिए देश की एक सड़क का नाम महात्मा गाँधी के नाम पर रखा है। इसके अतिरिक्त बर्लिन में महात्मा गाँधी के नाम पर एक विद्यालय भी चल रहा है, जहाँ के बच्चे महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व व विचारों से प्रभावित हैं।

नामीबिया के विंडहोक में एक मार्ग का नाम महात्मा गाँधी स्ट्रीट रखा गया है। इसका अनावरण पिछले दिनों प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा किया गया।

कलम में कंप्यूटर

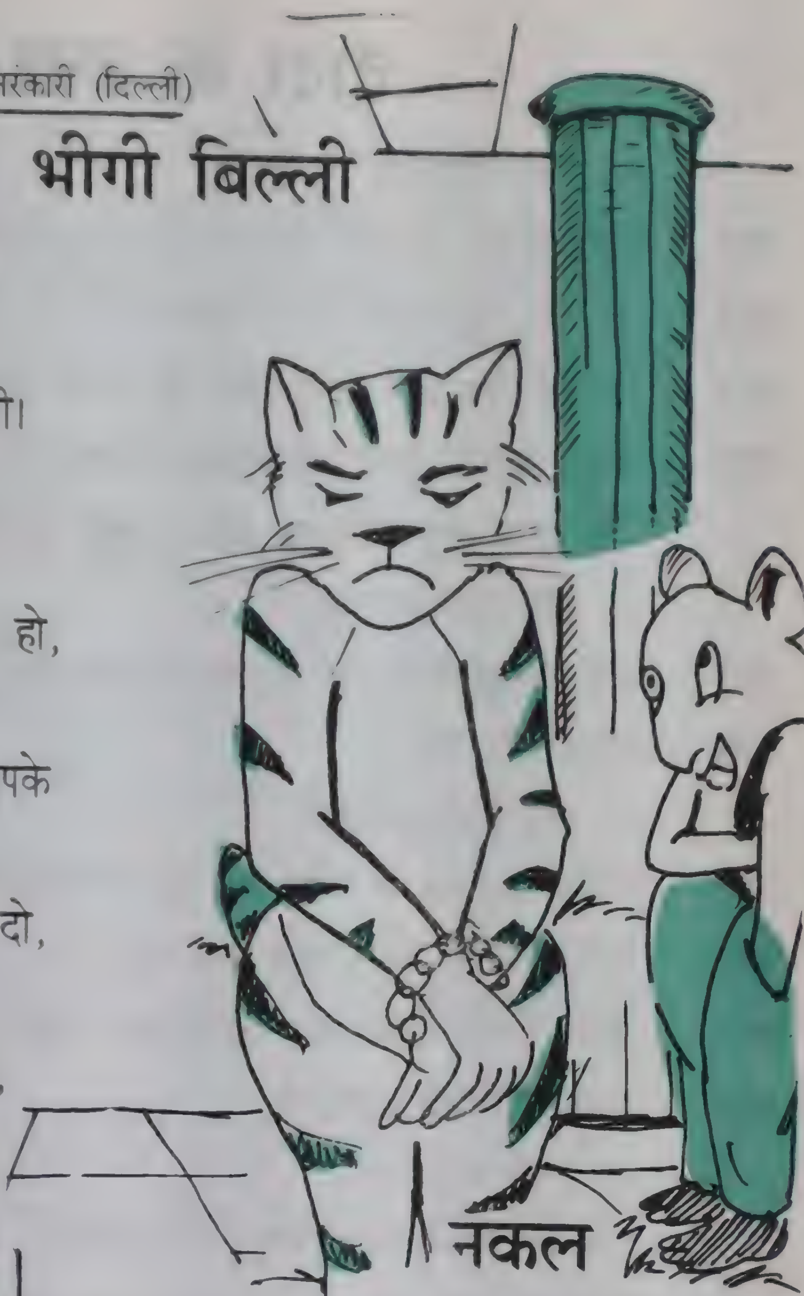
ब्रिटिश टेलीकॉम प्रयोग शाला ने एक ऐसे पेन का विकास किया है, जो कंप्यूटर से युक्त है। इससे जो भी कुछ भी लिखा जाता है, कंप्यूटर में दर्ज होता जाता है। मोबाइल फोन नेटवर्क का इस्तेमाल करके लिखे गये शब्दों को ई. मेल द्वारा भी भेजा जा सकता है।

यह कलम लगभग 2वर्ष बाद बाजार में आने की सम्भावना है।

— राम कुमार 'सेवक' द्वारा

दो बाल कविताएं : किशोर निरंकारी (दिल्ली)

भीगी बिल्ली



इक दिन चूहे राजा बोले
प्यारे पापा, मेरे पापा,
माणो बिल्ली बहुत सताती।
डाकू और दस्यू जैसी,
हमको खूब डराती।
आप तो पुलिस भर्ती हुए हो,
और बन्दूक चलाते।
पर हम बिल में दुबके छुपके
डरे-डरे क्यों रह जाते।
उसे पकड़कर अन्दर कर दो,
तब तो मजा आएगा।
भीगी बिल्ली उसे बताकर,
जज उसे सजा सुनाएगा।

नकल



इकदिन फन्ने खाँ नकलची
बन्दर सेविंग करने बैठे।
शीशे को बड़े ढंग से अपने
आगे कर शान से ऐंठे।
मुँह को साबुन से नहलाकर
रेज़र को सम्भाला।
गर्दन पर जब उसे चलाया
तो गला ही काट डाला।

दादा के उत्तर

— दविन्द्र पाल सिंह

प्रश्न : हँसती दुनिया क्या सिर्फ भारत में ही मंगवाई जाती है?

उत्तर : जी नहीं, दूर देशों में भी इसके प्रेमी हैं।

प्रश्न : दादा जी, क्या आप हँसती दुनिया के अलावा कोई और पत्रिका भी छापते हैं?

उत्तर : हँसती दुनिया बच्चों की मासिक पत्रिका है। निरंकारी मिशन की ओर से दूसरी कई पत्रिकाएं और पुस्तकें छपती रहती हैं।

— ओम (भीम, उदयपुर)

प्रश्न : दादा जी, दुनिया में किस पर ज्यादा भरोसा करना चाहिए?

उत्तर : अपने-आप पर।

— सोनू पठान (कुरखेड़ा)

प्रश्न : व्यक्ति को भाग्य पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए?

उत्तर : क्योंकि भाग्य का आधार कर्म होता है।

प्रश्न : जीवन में आने वाली परेशानियों को कैसे आसान किया जा सकता है?

उत्तर : सन्त-पुरुषों की संगत से।

— रजनी बतरा (इंदौर)

प्रश्न : किस हद तक मनुष्य को सन्तुष्ट रहना चाहिए?

उत्तर : जिस हद तक उसे आनन्द की इच्छा है।

— अनुज (जींद)

प्रश्न : आदमी का भगवान पर से विश्वास कब उठ जाता है?

उत्तर : जब अपना विश्वास टूट जाए।

प्रश्न : डूबते हुए सूरज की पूजा क्यों नहीं की जाती?

उत्तर : इसलिए कि डूबने वालों के लिए दया मांगी जाती है?

— जसबिंद्र राणा (कुक्कडां) गढ़शंकर

प्रश्न : प्रभु को अंग-संग जानकर इन्सान फिर मड़ियों-मसाणों पर दिये क्यों जला रहा है।

उत्तर : विश्वास की कमी के कारण।

— कु. सीमा टहलानी (खुर्जा)

प्रश्न : ब्रह्मा, विष्णु, महेश कौन से युग या ईस्वी सन् मे हो चुके है?

उत्तर : जब सन,संवत, आदि बने ही नहीं थे। वास्तव में सृष्टि की रचना करने वाले को ब्रह्मा; पालन करने वाले को विष्णु और संहार करने वाले को शिव की संज्ञा दी जाती है। इनका सम्बन्ध सन, संवत आदि से नहीं जोड़ा जाता।

— प्रहलाद जसवानी (मंडला)

प्रश्न : इनस्‌ान खुद के नुकसान की चिन्ता कब नहीं करता?

उत्तर : जब स्वार्थ अन्धा कर दे। या पूर्ण गुरु मिल जाये।

प्रश्न : मनुष्य अपने आप को भगवान कब समझने लगता है?

उत्तर : जब उसका पतन होने का समय आ जाता है।

— नीतू छाबड़ा (कोल्हापुर)

प्रश्न : दुनिया इतनी स्वार्थी क्यों हो गई है?

उत्तर : दुनिया तो होती ही स्वार्थी है इसमें इतनी, उतनी का क्या अन्तर?

— विनोद चुघ (इन्द्री)

प्रश्न : दादा जी, क्या ज्योतिषि भविष्य को बता सकते हैं?

उत्तर : ज्योतिष विज्ञान अवश्य बता सकता है परन्तु ज्योतिषि के बारे नहीं कहा जा सकता।

— सूरज टहलानी (कुरखेड़ा)

प्रश्न : 'भक्त के बस में भगवान' क्या यह सच है?

उत्तर : बिल्कुल।

— कमल केडिया (चुरू)

प्रश्न : व्यक्ति की धन के प्रति लालसा लगातार बढ़ती जाती है? कम क्यों नहीं होती?

उत्तर : लालसा कम होने वाली चीज ही नहीं।

— दविन्द्र पाल सिंह (रतिया)

प्रश्न : दादा जी, धर्म बड़ा है या इन्सानियत?

उत्तर : दोनों एक ही चीज के अलग-अलग नाम है।

प्रेरक कथा : कमल सौगानी

सच्चा अहिंसक

एक था राजा। उसका सेनापति सच्चा अहिंसक होते हुए भी अनेक युद्धों का विजेता वीर योद्धा था।

राजा की राजदानी पर कई मर्तबा शत्रुओं ने हमला किया लेकिन हर बार उन्हें हारकर जाना पड़ा।

एक दिन राजा ने सेनापति को अपने पास बुलाकर कहा—सेनापति जी, आप युद्ध में तो हजारों मनुष्यों को मार डालते हो और यहाँ कीड़े-मकोड़े, चींटी को भी बचाकर चलते हो, आखिर ऐसा क्यों?

सेनापति ने जवाब दिया—महाराज! युद्ध में देश की रक्षा का प्रश्न है। वहाँ किसी को मारने नहीं देश को बचाने जाता हूँ। रक्षा करते हुए कोई मारा जाय तो मेरा क्या अपराध है।

अब राजा ने सेनापति को लालच देते हुए एक प्रश्न किया—यदि तुम एक चींटी को मेरे सामने अपने हाथों से मार दोगे तो मैं तुम्हें एक लाख सोने के सिक्के इनाम में दूंगा।

सेनापति ने कहा—महाराज! मैं अपने नियमों का एक सच्चा अहिंसक हूँ। यहाँ एक चींटी को मारने के बदले में आप अपना पूरा राज्य भी मुझे दें तो भी मैं उसको नहीं मार सकता। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए किसी की भी हिंसा करना भयंकर पाप है। देश की रक्षा करना मनुष्य का कर्तव्य है।

राजा अपने सेनापति के जवाब से बड़े खुश हुए और उसे इनाम के एक लाख सिक्के देते हुए बोले—वास्तव में तुम एक सच्चे अहिंसक हो। ●

सितम्बर अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम : अरविन्दर कौर — आयु 10 वर्ष
122/2 दूरदर्शन इन्कलेव.
खुरला खींगरा, फेस-1, जालन्धर (पंजाब)

द्वितीय : सिमरन गुप्ता — आयु 11 वर्ष
सुपुत्री/ श्री जय भजन गुप्ता
ब्रीकस मर्चेण्ट, पुराना बाजार के पास
ईस्माइलाबाद (करनाल) 136129

तृतीय : अमित विशनानी — आयु 12 वर्ष
बी के नं. 132 नं. 4
गाँधी पुतला के पास, गाँधी नगर
कोल्हापुर - 416119 (महाराष्ट्र)

इन बच्चों को हँसती दुनिया की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं —

परेश गुप्ता (इटावा), संदीप कुमार वर्मा (नई दिल्ली). विनीत कुमार (विजय पुर, गूना).अमन गंभीर (दिल्ली), अस्मीत सेठी (अमृतसर) हेमन्त गुप्ता (आगरा), गौरी विशनानी (हमीरपुर) एम. रोताश अदिती गोयल (भटिण्डा)

नवम्बर अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है । इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 15 दिसम्बर तक हँसती दुनिया कार्यालय में भेज दें । तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगे।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के फरवरी-1999 अंक में की जायेगी । चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं ।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा ।

रंग भरो



नाम .... आयु ....

पूरा पता ....

....

....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये हैं । यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/चैक/ बैंक ड्राफ्ट/ पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं –

सचिव,
(प्रकाशन विभाग)
सन्त निरंकारी मण्डल
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

नोट : चैक/ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मणडल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।

कहानी: श्रीमती ऊषा सभरवाल (दिल्ली)

काल करे सो आज कर

लंकेश रावण मृत्यु शैय्या पर पड़ा अन्तिम सांसें ले रहा था। तभी उसने देखा कि लक्ष्मण उसकी ओर चले आ रहे है। लक्ष्मण सादर प्रणाम करने के बाद बोले—मेरे भाई श्रीराम ने मुझे आपसे ज्ञान की बातें सिखने के लिये भेजा है।

आश्चर्य से भरकर रावण बोला—तुम्हारे भाई सर्वज्ञ परमेश्वर है मैं तुन्हें क्या सिखा पाऊँगा। और फिर मैं तो उठकर चल भी नहीं सकता।

लक्ष्मण ने कहा—आप इसकी चिन्ता न करें मैं श्रीराम को यहाँ लिवा लाऊँगा। श्रीराम आ गये। उनसे रावण ने विनम्रतापूर्वक कहा—हे सूर्यवंश के गौरव,मेरा प्रणाम स्वीकार करें। मैं राक्षस हूँ मैं आपको क्या सिखा पाऊँगा।

श्रीराम बोले—यह सच है कि तुम राक्षस हो लेकिन ये भी सच है कि तुम एक शक्तिशाली और बुद्धिमान शासक रहे हो। तुम्हें अच्छे और बुरे का ज्ञान है। मैं ये ज्ञान तुम से प्राप्त करना चाहता हूँ।

रावण ने उपदेश देना प्रारम्भ किया। रावण बोला—अच्छे कर्मो को कभी



टालना नहीं चाहिए। हो सकता है कि टालने के कारण उन्हें करने का कभी अवसर ही न मिल पाए। मैंने तीन अच्छी योजनाएं बनाई थीं।

नरक का मार्ग बन्द कर दूँगा ताकि किसी को भी नरक का दुःख न भोगना पड़े।

लंका को घेरने वाले समुद्र का सारा खारा पानी निकालकर उसमें दूध भर दूँगा और धरती से स्वर्ग तक एक सीढ़ी लगा दूंगा जिससे पापी पुण्यात्मा सभी लोग स्वर्ग तक पहुँच सकें।

इतना कहकर रावण हाँफने लगा। बोलने की शक्ति कम होती जा रही थी। थोड़ी देर के बाद बोला—आपने ठीक ही कहा—मैं एक शक्तिशाली शासक था। ये तीनों काम करना मेरे लिए कठिन नहीं था। लेकिन मैं इन कामों को टालता रहा और मैं इन कामों को कभी नहीं कर पाया। ये कहकर रावण चुप हो गया।

श्रीराम बोले दशानन अब बुरे कामों के विषय में भी कुछ बतलाओ। रावण बोला—अच्छे कामों को टालना जितना बुरा है, बुरे कामों को टालना उतना ही अच्छा है। मैंने सीताहरण की योजना बनाई। मेरा दुर्भाग्य तो देखो मैं इस बुरे काम को नहीं टाल पाया और आज उसका परिणाम मैं भोग रहा हूँ। यह कहकर रावण ने सदा के लिए आँखें बन्द कर ली।

—बच्चों अच्छे कार्यों को करने का समय होता है। आज और अभी और बुरे कार्यों को करने का समय ईश्वर कृपा से तुम्हारे जीवन में कभी न आए।


मास्टरजी
आओ बच्चो! एक सच्ची कहानी सुनो!
जी! मास्टर जी!
भगवान! हम आपकी सर्वश्रेष्ठ रचना के दर्शन करना चाहतें हैं।
ठीक है! जाओ धरती पर
वहां हमने अपने ही अंश
मनुष्य बनाया है। उसे शीश झुकाओ!
जी भगवन!
श्री भगवान की जय!


मैं भी मनुष्य को अपना अंश दूंगा।
मैं भी कुछ दूंगा।
मैं भी!



परन्तु धरती पर मनुष्य द्वारा तरक्की के नाम पर
तरफ विनाश.... पर्यावरण की अभूतपूर्व क्षति.... चिमनियों
ज़हरीले धुँए तथा क़हर बरपाते रासायनिक धमाके
धड़ाम
शिक्षक हड़ताल
हड़ताल


देवता उसके सामने खड़े थे –
अरे तुम; प्रभु की श्रेष्ठतम रचना !?
कदाचित् तुम स्वय को भूल गये हो।
मानव, गुरू-बहृस्पति से तीक्ष्ण बुध्दि, वन देव से गति, वरुण देव से रस, चन्द्र, शीतलता लो! तत्पश्चात् स्वयं में झाकों....


...तुम प्रभु की श्रेष्ठतम रचना हो। लौट चलो आनन्द की ओर –
मनुष्य ठीक मनुष्य दिखाई देने लगा।
देवता उसे प्रणाम करतें है त्रिदेव उस पर पुष्पों की वर्ष करतें हैं।
यही है हमारी रचना।
तुम भी मनुष्य हो। स्वयं को भूलना नहीं। तुम सर्वश्रेष्ठ रचना हो।
जी! मास्टरजी।
समाप्त


Mfrs. of MULTI COLOUR, FLEXOGRAPHIC & ROTO GRAVURE PRINTED
POLYTHENE, P.P., H.M. BAGS
NEW LIGHT PRODUCTS
Specialists in : SHOPPING BAGS
Fac. : C - 10/1, WAZIRPUR IND. AREA, DELHI-110052. ☎ 7211401, 7420552
Office : 10673/3, JHANDEWALA ROAD, NABI KARIM, NEW DELHI-110055
☎ 7513254, 525762. TELE-Fax. : 7774164.

कहानी: अर्चना शर्मा (मथुरा)

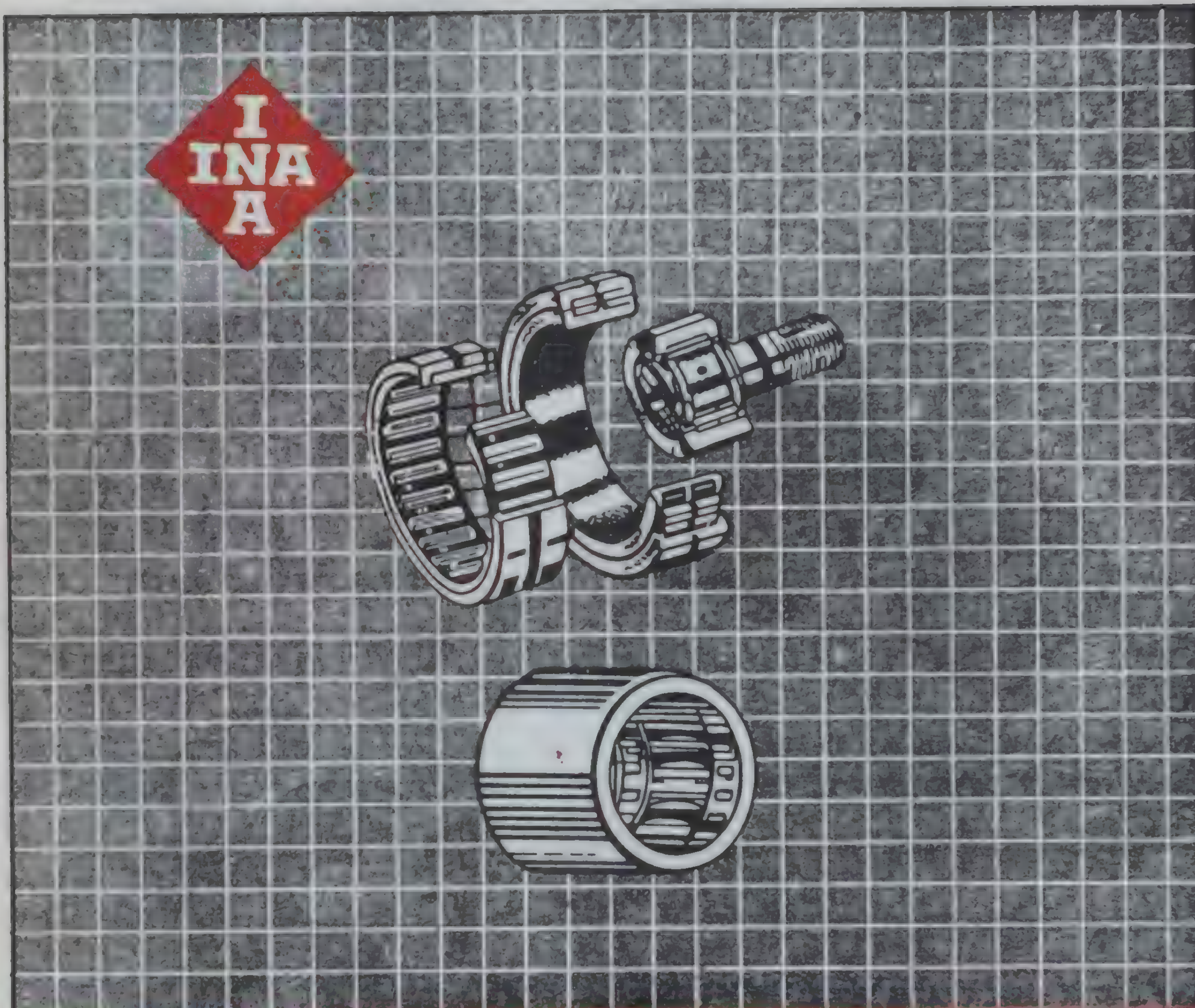
चुनमुन की चिन्ता



चुनमुन चिड़िया आज सुबह से ही काफी परेशान थी। एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ती और फिर अपने घोंसले के पास आ बैठती। बच्चों की चीं-चीं-चीं की आवाज सुनकर उनसे प्यार करती, दाना खिलाती और फिर उदास हो जाती।

चिंकी गिलहरी बड़ी देर से चुनमुन को इस परेशानी में देख रही थी। जब उससे रहा न गया तो फुदकती-फुदकती चुनमुन के पास आयी और बोली—चुनमुन बहन, क्या बात है आज तुम कुछ परेशान दिखायी देती हो, क्या मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकती हूँ?

चिंकी गिलहरी की आवाज़ सुन, चुनमुन उदास स्वर में बोली—क्या बताऊँ बहन, मैंने कल दो आदमियों को जंगल में देखा था। उनमें से एक के हाथ में कुल्हाड़ी थी और दूसरे के हाथ में एक रस्सा। मैं तभी से परेशान हूँ। मुझे लगता है वो कुल्हाड़ी से पेड़ों को काटने आये हैं। चिंकी बहन अब तुम्हीं बताओ


I
INA
A

मेरे बच्चे तो अभी बहुत छोटे हैं। अभी तो वे उड़ना भी नहीं जानते। बहन, तुम्हीं बताओ मैं अब क्या करूँ?

चिंकी गिलहरी चुनमुन की बात सुनकर सोच में पड़ गयी और गम्भीर स्वर में बोली—तुम्हारा डरना स्वाभाविक है बहन। न जाने ये मनुष्य इतना क्रूर कैसे होता जा रहा है? जिन वृक्षों की ठंडी छाया में ये बैठता है, जिनके मीठे फलों से अपनी भूख मिटाता है जिनके कारण आज पृथ्वी पर जीवन है; उन्हीं वृक्षों को ये इतनी बेदर्दी से काट देता है। हमें अवश्य ही कुछ सोचना चाहिये।

अभी वे बात कर ही रही थी कि पैरों की आहट सुनकर चुनमुन बोली—कोई आ रहा है। कहीं ये वे दोनों ही तो नहीं।

चुनमुन का अंदाजा सही था। उन्हें देख चिंकी एवं चुनमुन पत्तों की आड़ में छिप गयीं। चुनमुन का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। मन ही मन वह भगवान को याद कर रही थी। —हे भगवान! मेरे बच्चों की सहायता करो।



चुनमुन ध्यान से दोनों आदमियों की बातें सुनने लगीं।

एक आदमी दूसरे से कह रहा था—देखो! कितना सुन्दर और बड़ा पेड़ है। फिर उसने झट से पेड़ पर से एक आम तोड़ लिया और खाते हुए बोला—वाह! कितना मीठा आम है लो तुम भी खाओ।

दूसरे व्यक्ति ने भी आम चखा और बोला—हाँ मित्र, वाकई आम बहुत मीठा है। न जाने आदमी कैसे इतने सुन्दर और हरे-भरे पेड़ों को काट देता है। ऐसे ही हरे-भरे पेड़ों को काटने वाले अपराधियों को पकड़वाने के लिये हमारी नियुक्ति इस जंगल में की गयी है। देखना, कुल्हाड़ी और रस्सा लेकर जंगल



में घूमने की हमारी योजना जरूर सफल होगी। क्योंकि इससे अपराधी हमें पहचानने में अवश्य भूल करेंगे और वे हमें भी अपनी तरह समझेंगे जिससे हमें भी उन तक पहुँचना आसान हो जायेगा। उनको पकड़वाना भी। अच्छा चलें काफी समय हो चुका है।

चिंकी और चुनमुन ने उनकी बातें सुनीं तो उन्हें चैन की सांस ली। चुनमुन ने भगवान को धन्यवाद दिया और अपने प्यारे-प्यारे बच्चों के साथ खेलने लगी। उसने गिलहरी से कहा—हम भी सभी मनुष्यों को एक सा समझने की भूल कर बैठी थी। अच्छे लोग भी होते हैं, वे ही हमारे मित्र हैं। दोनों प्रसन्नता से खेलने लगीं।

कविताः दिनेश 'दर्पण'

पोंगा पंडित भागे



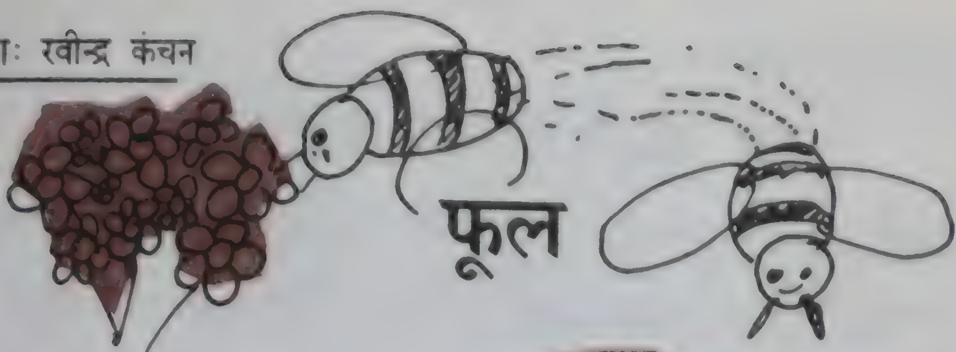
पंडित बनकर गधे राम जी
कथा बांचने आये,
देख सामने लोमड़ जी को
क्रोधित हो झुंझलाये,
बोले नहीं अक्ल है तुमको
तू क्या कथा सुनेगा?
सुन भी लेगा अगर जरा तू
तो क्या कुछ सीखेगा।



लोमड़ बोला— अरे गधे जी
मत अपने दिन भूलो,
व्यर्थ अकड़कर अपने मन में
मत इतना तुम फूंलो।
कोई बड़ा न छोटा होता,
सब हैं एक समान।
शुरु करो तुम कथा कहानी,
मेरे भी हैं कान।
सुनकर उत्तर लोमड़ जी का
गधेराम घबराये,
भूल गये सब कथा कहानी,
भागे दुम दबाये।

कविता: रवीन्द्र कंचन

फूल



हँसना हमें सिखाते फूल,
सबका मन बहलाते फूल।
तितली हों या भौरे हों
देख सभी ललचाते फूल।

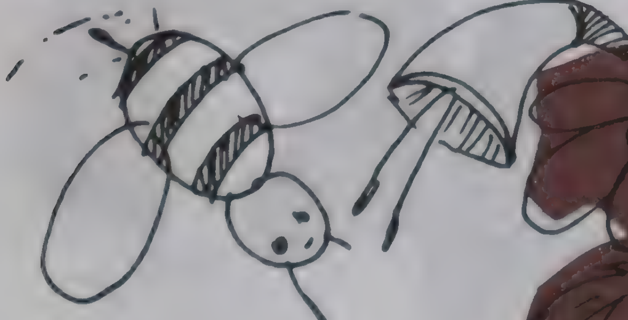




चुन्नू मुन्नू खुश हो जाते,
सबका मन हर्षाते फूल।
सदा खुशी का पाठ पढ़ाते,
रोतों को भी हँसाते फूल।



इतनी सुंदरता पाकर भी
कभी नहीं इतराते फूल।
गंध लुटाकर सारे जग में
चुपके से झर जाते फूल।

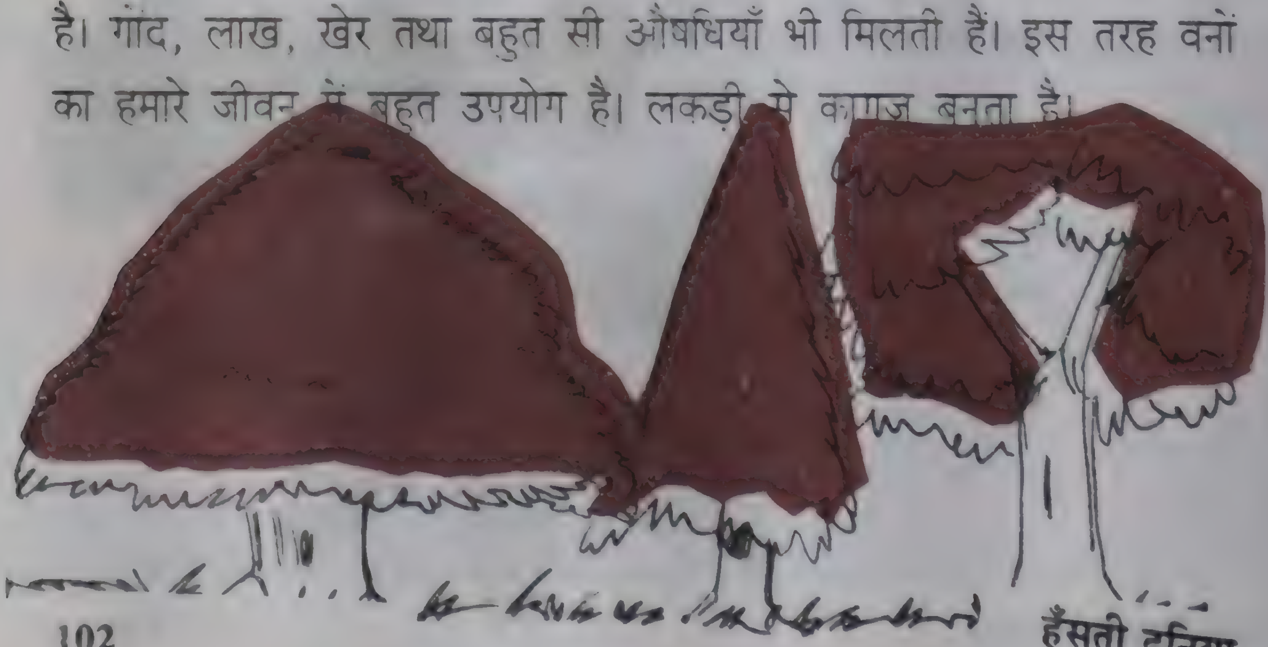


वन हमारे जीवन प्राण हैं

हम किसी बड़े शहर में पहुँच जाते हैं तो ऊँची-ऊँची इमारतों को आश्चर्य से देखने लगते हैं। कुछ ही देर में हम इन ऊँची इमारतों के बीच घबरा जाते हैं। कहीं खुले में सांस लेने को आतुर हो जाते हैं, जब कभी हम किसी बाग बगीचे, जंगल में कुछ क्षण को भी पहुँच जाते हैं तो हमारा रोम-रोम पुलकित हो उठता है। घने पेड़ों की शीतल ठंडी छाया हमें कूलर से भी अधिक ठंडी लगती है। हम उस छाया में उत्साहित हो उठते हैं। हम ऊँचे भवनों के बिना तो रह सकते हैं पर पेड़-पौधों के बिना नहीं। वन हमारा जीवन प्राण है।

हमारे देश का बहुत-सा भाग हरे भरे वनो से ढका हुआ है। वनों में चीड़, देवदार, बांस, बुरांश, बरगद, पीपल, बबूल, सीशम, साल, मुछा, पलाश खेर तथा बहुत से वृक्ष पाये जाते हैं। इनसे बहुत सी कीमती जड़ी-बूटियाँ तथा औषधियाँ भी मिलती हैं। अनेक जंगली जानवर तथा सुन्दर पक्षी इन वनों में रहते हैं। वनों से ही हमारे देश का सौंदर्य इतना अधिक बना हुआ है। ये सघन वन मनमोहक लगते हैं। इनमें घूमने में बहुत आनन्द आता है।

वनों से हमें अनेक लाभ हैं। वनों से लकड़ी मिलती है। जिससे हम अपने घर बनाते हैं। लकड़ी जलाने के काम आती है। लकड़ी से मेज, कुर्सी, पलंग, पेटियाँ, खिलौने आदि बनाते हैं। कुछ वृक्षों से बिरोजा अथवा लीसा निकलता है। गोंद, लाख, खेर तथा बहुत सी औषधियाँ भी मिलती हैं। इस तरह वनों का हमारे जीवन में बहुत उपयोग है। लकड़ी से कागज बनता है।



किन्तु वनों से कई लाभ ऐसे भी हैं जिन पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। वृक्षों के पत्ते झड़कर नीचे गिरते हैं और गल सड़कर मिट्टी में मिल जाते हैं। इससे धरती की मिट्टी की परत मोटी तथा उपजाऊ रहती है। इस मिट्टी में ही नये-नये पौधे तथा वृक्ष उगते हैं। जब वर्षा होती है तो वर्षा का बहुत-सा पानी मिट्टी पी लेती है। यह पानी पर्वत के भीतर ही भीतर रिस-रिस कर इकट्ठा होता



रहता है। पहाड़ों में हम जगह-जगह जो झरने और चश्में देखते हो वे इसी जल के कारण पूरे वर्ष बहते रहते है। यदि वन की मिट्टी इस जल को न सोखे तो सारा पानी बहकर नदी में चला जाएगा। इतना पानी एक साथ आ जाने से नदी में बाढ़ आ जाएगी। दूसरी ओर झरनों को पानी नहीं मिलेगा तो वे सूख जाएंगे। इससे लोगों को पानी की कठिनाई होगी। एक तो वृक्षों पर पत्तों का छत्र होने से वर्षा के जल की तेज धार नहीं बनती। बल्कि यह रिस कर नीचे आता है।

दूसरे वन में पेड़-पौधों झाड़ियों को तथा घास-फूस की जड़ें मिट्टी को भली-भाँति जकड़े रहती है। इसी से यह जल मिट्टी को बहाकर नहीं ले जा सकता। किन्तु जंगल कट जाने पर मिट्टी को यह सुरक्षा नहीं मिलती। सारी मिट्टी पानी के साथ बह जाती है।

एक बार यह मिट्टी बही कि पूरी धरती मे केवल पत्थर और चट्टानें ही रह जायेंगी। तब इस पर कुछ भी नहीं उग सकता। चट्टानो पर मिट्टी की परत बनने में हजारों वर्ष लगते हैं। दुबारा मिट्टी बनना लगभग असम्भव सा है। इस तरह वन कटने के साथ-साथ हम सदा के लिए अपने पेड़ों-पौधों, झाड़ियों, लताओं और फलों-पत्तों को खो देते हैं। यह भयानक हानि है। जब पेड़-पौधे कट जाते हैं और मिट्टी बह जाती है तो पत्थर और चट्टानों की कोई पकड़ नहीं रहती। पहाड़ टूट-टूटकर गिरने लगता है। अभी इसी वर्ष अगस्त माह में ऐसा ही हुआ है। पिरौरागढ़ के एक गाँव मालपा जो पहाड़ों पर ही है जंगल कटने से पानी के बहाव में बह गया। पहाड़ के टूटकर गिरने से गांव का नामों-निशान ही समाप्त हो गया। वनों से ही जलवायु ठंडी रहती है। वन सूर्य किरणों की गर्मी रोक लेते हैं। नंगी धरती धूप पड़ते ही तपने लगती है। अतः जलवायु गर्म हो जाती है। गर्म वायु से ऊँचे पर्वतों की बर्फ भी पिघल कर कम हो जाती है। शनैः-शनैः पूरा मौसम ही बदल जाता है।

अतः हमें अपने वनों की रक्षा करनी चाहिए। वृक्ष नहीं काटने चाहिए। नये-नये वृक्ष लगाने चाहिए। हम उतने ही वृक्ष काटें जितने अनिवार्य हों। वह भी तभी जब उतनी ही संख्या में नये वृक्ष लगा दिये जायें। हमें आग से भी वनों की रक्षा करनी चाहिये। वन ईश्वर का वरदान है। वन काटने का अर्थ है सूखे और पथरीले पहाड़, बढ़ती हुई गर्मी, लकड़ी का अभाव तथा विनाशकारी बाढ़ें। नये वृक्षों को बड़ा होने में वर्षों लगते हैं। एक घना और हरा-भरा जंगल तो सैकड़ों वर्षों में बनता है। किन्तु इसे काटने में देर नहीं लगती। अतः जंगल काटना एक बड़ी भूल है। यह वास्तव में अपने पावों पर आप कुल्हाड़ी मारना है।

हमारे देश की हमारी धरती की शोभा हमारे वनों से है। आओ इन की रक्षा का संकल्प करें। ●

डॉ. अंकल के उत्तर

❑ डॉ. कुन्दन कुमार

— देवेन्द्र निरंकारी (मंडी गोबिन्दगढ़)

प्रश्न : मेरी आयु 22 वर्ष है। मेरे गाल अन्दर को धसें हुए हैं। बाहरी उभार लाने के कारण उपाय बताइयेगा?

उत्तर : सुबह-शाम मुंह में पानी भरकर जितनी देर रख सकें रखें। फिर पानी बाहर निकाल दिया करें। चारों मगज़ सुबह दूध से लें लाभ होगा।

— समता पवरेजा (रोहतक)

प्रश्न : डा. अंकल मेरे पैरों की उंगलियों में बहुत सूजन रहती है। चाहे सर्दी हो या गर्मी यह हमेशा ही सूजी रहती है। मैंने कई इलाज करवाये पर कोई असर नहीं पड़ा। दर्द तो गया पर सूजन नहीं गयी। कृपा करके कोई उपाय बतायें?

उत्तर : पानी में थोड़ा नमक, मीठा सोडा व बकायन के पत्ते मिलाकर उसमें पैरों को सुबह व रात को सोते समय धोयें। शीघ्र लाभ होगा।

— शारद सिडाना (आगरा)

प्रश्न : डा. अंकल मेरी उम्र 40 वर्ष है। मुझे सीढ़ियाँ चढ़ते या पैदल चलते समय सीने में बहुत दर्द होता है। और दिल की धकड़न तेज हो जाती है। जिससे कान सिर तथा आस-पास की कुछ जगहों पर दर्द हो जाता है। कृपया रोग तथा रोग का कोई सरल उपाय बताएं?

उत्तर : किसी हृदय रोग विशेषज्ञ से अच्छी प्रकार जांच करवा लें।

— आशीष कुमार (दिल्ली)

प्रश्न : परीक्षा नजदीक आते ही नींद अधिक आने लगती है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर : किसी काम को करने में रुचि न हो और बेमन से उस काम को जबरदस्ती करना पड़े तो आलस और सुस्ती आती है। पढ़ने में रुचि न होने के बावजूद मजबूरन परीक्षा के कारण पढ़ना पड़ता है। इसलिए नींद आती है। आप मन लगाकर रुचि से पढ़े। खाना खाने, दूध पीने अथवा कोई स्वादिष्ट पदार्थ खाने के तुरन्त पश्चात पढ़ने से भी नींद आती है। खाना खाने के एक-डेढ़ घण्टे बाद पढ़ा करें। हाँ, पढ़ा हुआ पूरी तरह याद हो इसके लिए पर्याप्त नींद लेना भी जरूरी है। पढ़ना सोना और खाना योजनानुसार होना चाहिए। तभी इनका पूर्ण लाभ होगा

कभी न भूलो

☐ संग्रहकर्ता: भींवा राम बैरवा

☐ केवल ज्ञान नहीं, सन्त कर्म और ज्ञान दोनों का मूर्तरूप होता है।

— निरंकारी बाबा

☐ मानव परिस्थितियों का गुलाम नहीं, अपितु परिस्थितियाँ मनुष्य की दासी हैं।

— डिजरायली

☐ संकट के समय धीरज धारण करना ही अच्छी लड़ाई जीत लेने के समान है।

— प्लॉट्स

☐ बुराई के सम्पर्क से हमारी अच्छी आदतें भी दूषित हो जाती हैं।

— अज्ञात

☐ भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है।

— स्वामी विवेकानन्द

☐ परोपकार से ही प्रेम का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है।

— निरंकारी बाबा

☐ अभिमान नरक का मूल है।

☐ चरित्र के सामने विद्या का मूल्य बहुत कम है।

— प्रेमचन्द

☐ प्रसन्नता सभी गुणों की माँ है।

☐ अपनी सहायता स्वयं करो तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा।

— एच. स्पेन्सर

☐ मानव मात्र के प्रति हित व दया की भावना रखना वास्तविक धर्म होता है।

☐ कलयुग में रहना है या सतयुग में, यह तो स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। — आचार्य विनोबा भावे

पढ़ो और हँसो

गणितज्ञ मरीज से डाक्टर ने कहा—लम्बी सांस लो और तीन बार सात बोलो।

मरीज ने लम्बी सांस ली और कहा—इक्कीस।

– सुरेश खुराना 'पप्पी' (जीन्द)

एक बार शेखचिल्ली की माँ ने उससे कहा कि बेटा स्कूल में जो भी काम मिले उसे घर आकर दोहराया करना।

एक बार घर आकर शेख चिल्ली मुर्गा बना हुआ था, तो उसकी माँ ने कहा—शेखू तू मुर्गा क्यों बना हुआ है?

शेखचिल्ली ने कहा—माँ तुम्हीं ने तो कहा था कि जो काम स्कूल में करो उसे घर दोहराया करो।

– इन्द्रजीत जसवाल (किशनगंज, दिल्ली)

महिला ग्राहक : (दुकानदार से) भाई साहब एक शीशा चाहिए।

दुकानदार : हाथ का शीशा

महिला ग्राहक : नहीं मुँह का शीशा। हाथ तो मैं बिना शीशे के भी देख सकती हूँ।

\+ \+ \+

अध्यापिका : (छोटे बच्चे से) अगर पाँच रुपये के दस अंडे मिलते हैं तो पचास पैसे के कितने अंडे मिलेंगे?

बच्चा : एक भी नहीं।

अध्यापिका : क्यों कैसे?

बच्चा : (बड़ी मासूमियत से) एक अंडा लाने से तो अच्छा मैं टाफियाँ ही खरीद लूँगा। **– प्रतीक गुप्ता (कानपुर)**

गुरदीप : सुरिन्द्र से तुम मेरे पैसे कब तक लौटा दोगे?

सुरिन्द्र : मुझे क्या पूछते हो, क्या मैं ज्योतिषी हूँ?

सुनील : यार नाथु, कोई ऐसा गप्प सुना जोकि मैंने कभी ना सुना हो।

नाथु : सुनाऊँ।

सुनील : हाँ।

नाथु : तो सुन, एक बुढ़िया बचपन में मर गई।

— विनीत किंगर (रानीबाग, दिल्ली)

बशीघर : कहो बच्चू कैसी नींद आई?

सुरेन्द्र : मुझे क्या पता? मैं तो सो रहा था।

— संजय दास (बिजनौर)

—यार दिलीप तुम इंगलैंड गए थे वहाँ तुम्हें अंग्रेजी बोलने में परेशानी तो नहीं हुई?—

—मुझे क्यों परेशानी होती? हाँ अंग्रेजों को समझने में हुई होगी तो कह नहीं सकता।—

— ओमसिंह पवार (ब्यावर)

प्रहलाद : जसवानी से, यार मजा आ गया रसगुल्ले खाने में।

जसवानी : पर मुझे मजा नहीं आया।

प्रहलाद : क्यों?

जसवानी : इसलिए कि पैसे तो मुझे ही देने पड़ेंगे।

— प्रहलाद जसवानी (मंडला)

नेता : (डाक्टर से) मेरी रिपोर्ट जरा मेरी भाषा में सुनाइए।

डाक्टर : तो सुनिए, मेरी रिपोर्ट के अनुसार आपका ब्लड-प्रेशर घोटालों की तरह बढ़ गया है। फेफड़े झूठा आश्वासन दे रहे हैं। दिल इस्तीफा देने वाला है।

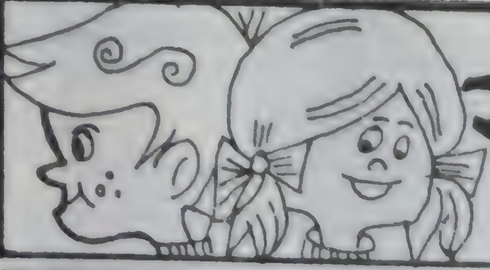
\+ \+ \+

डाक्टर : (मरीज से) मैं आपको काफी दवाइयाँ दे चुका हूँ लेकिन असर नहीं हुआ। अब मैं दवा बदलकर देखता हूँ।

मरीज : नहीं डाक्टर साहब, अब मैं डाक्टर बदलने की सोच रहा हूँ।

— मोहन ए. निरंकारी (देसाईगण (बड़सा)

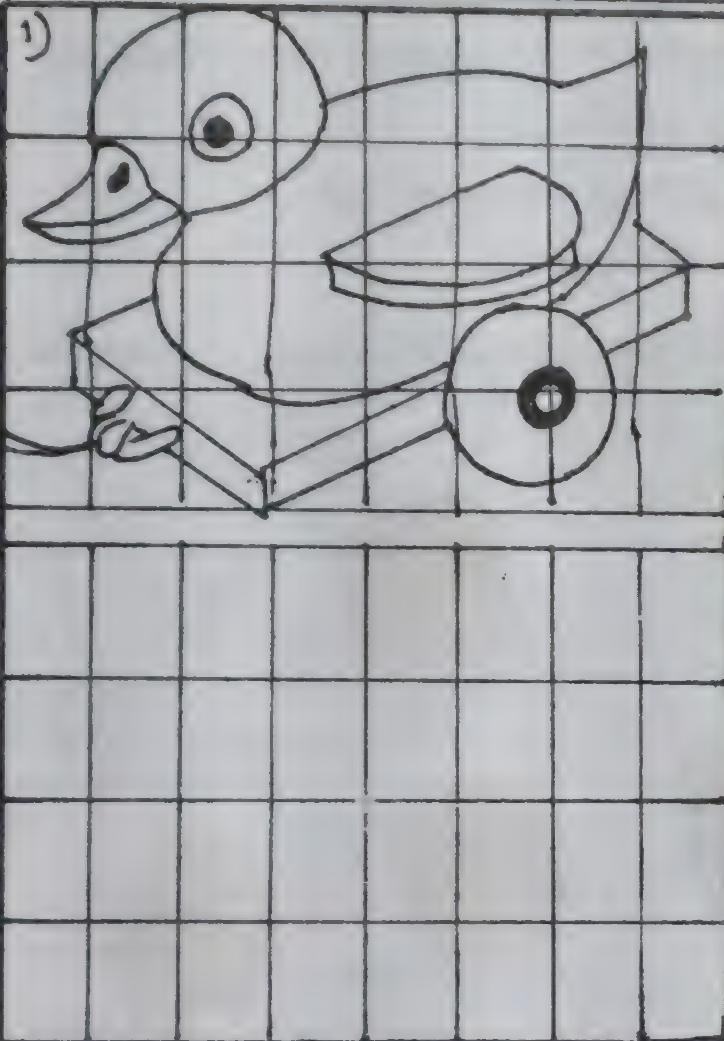

स्कूल जाना चाहिए था
चित्र• प्रीति 'नन्ही'
बेटे! इतनी छोटी उम्र में यह भिखारी का काम... तुम्हें तो अभी स्कूल में जाना चाहिए था...
स्कूल
वहां भी गया था साब! पर किसी ने एक पैसा तक नहीं दिया...।
स्कूल



खेल का समय

किशोर डैनियल

1)



गाफ की सहायता से चित्र बनाना सीखो

2)



रंग भरो

3)



आसान चित्र बनाओ और फिर रंग भर कर देखो।

पर्यावरण प्रश्नोत्तर पहेली

❑ राजेन्द्र कुमार बाड़मेरा (ब्यावर)

सुधीर को पर्यावरण विभाग के कार्यालय में पहुंचाने के पश्चात् नीचे दिये गये संकेतों के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये –

1. वह कार्यालय पहुँचने तक कुल कितने पौधों को पानी देगा।
2. वह खाली जमीन में कितने नये पौधे लगाएगा।

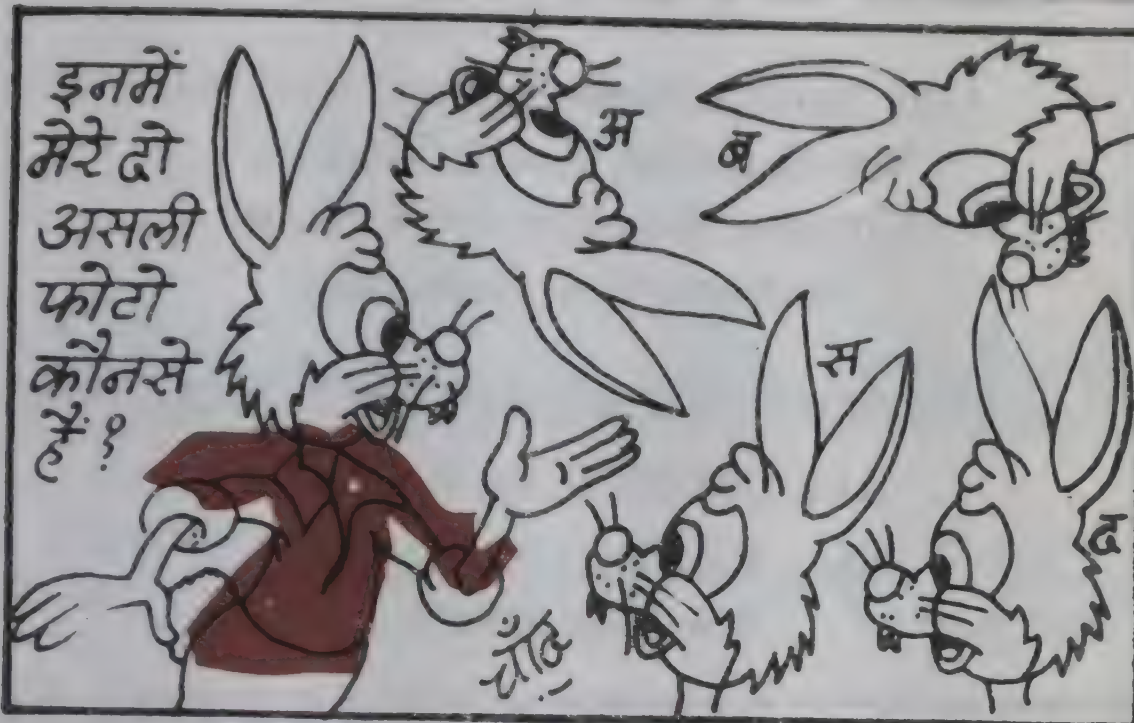


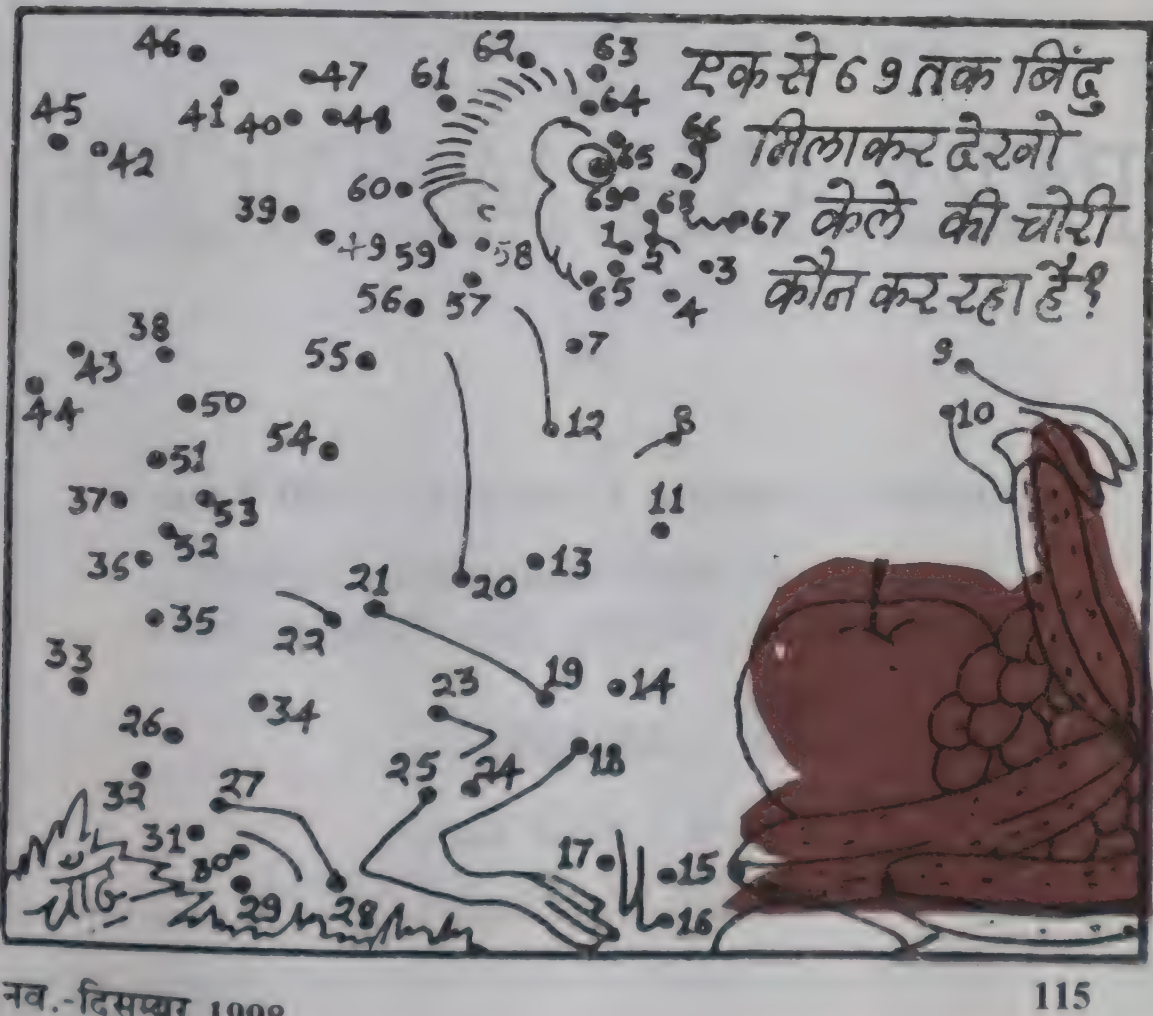
संकेत	(पौधे का चिह्न)	(खाली जमीन का चिह्न)
नाम	पौधे	खाली जमीन

हल
3 पौधों को पानी देगा
6 नये पोधे लगायेगा

खेल का समय

उत्तर इसी अंक में हैं.





आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। मैंने सितम्बर माह की पत्रिका पढ़ी इसमें मुझे 'सुखी कौन?', 'एकता का महत्व', 'घुंघरू की आवाज' आदि कहानियां प्रिय लगी। कविताएं 'कितना अच्छा होता', 'प्रेम भाव के गीत' अच्छी लगीं। स्तम्भों में 'डॉ. अंकल के उत्तर', 'दादा के उत्तर' शिक्षाप्रद व जानकारीपूर्ण रहे। पढ़ो और हँसो भी मनोरोजंक थे।

मैं दिल से कामना करता हूँ कि यह पत्रिका दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति करे।

❑ **प्रकाश पंचाल (अहमदाबाद)**

एक बार अन्य पत्रिका न रहने से मैंने 'हँसती दुनिया' को पढ़ा और तब से लेकर आज तक मैंने कभी इसे नहीं छोड़ा। मैं जब तक कई महिलाओं एवं बच्चों को यह पत्रिका पढ़ने दे नहीं दूँ चैन नहीं आता।

❑ **श्रीमती रोशनी नागपाल (खंडवा)**

हँसती दुनिया में कहानियाँ, कविताएं एवं पढ़ो और हँसो स्तम्भ अच्छे लगते हैं। इससे हर बच्चे को ज्ञान मिलता है और बड़े बूढ़ों का मनोरंजन होता है।

❑ **उमा देवी, शरद, अशोक अग्रवाल**

मैं हँसती दुनिया का दस वर्ष पुराना पाठक हूँ जब भी आपकी पत्रिका आती है सब काम छोड़कर पहले इसको पूरी पढ़ता हूँ। अक्टूबर माह की हँसती दुनिया में 'दीवाली की रात हुई', भैया आज दिवाली है' मुझे बेहद पसन्द आई।

❑ **पवन कुमार छीपी (खेतड़ी)**

मैं हँसती दुनिया की नई पाठिका हूँ। मैं इस पत्रिका से बहुत प्रभावित हूँ स्तम्भों में पढ़ो और हँसो, दादा जी के उत्तर, कभी न भूलो तथा सभी कहानियाँ रोचक लगती हैं और मैं सतगुरू से प्रार्थना करती हूँ कि मैं इस पत्रिका की आजीवन सदस्य बनूँगी ये पत्रिका का मैं बेसब्री से इंतजार करती हूँ और हमारे पूरे घर को इस पुस्तक का इन्तजार रहता है।

❑ **आशा कुकरेजा (दोंडाईचा)**

अभी हँसती दुनिया के दो अंक पढ़ चुका हूँ। पढ़ने में बहुत ही दिलचस्प लगी सारी कहानियाँ, कभी न भूलो और दादा दी के उत्तर, आदि से बहुत सी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

❑ **अनीस खान (नैनपुर (मंडला)**

अक्टूबर माह की हँसती दुनिया मुझे अच्छी लगी। मेरे चाचा जी अभी कुवैत से आये थे और उसी दिन दोपहर को हँसती दुनिया पढ़ी तो हमारे परिवार के साथ हँसती दुनिया के बारे में लगातार एक घंटे तक बात हुई। और उनको पसन्द आई। गुरुभक्ति, भलाई करो, एवं अनेक कहानियाँ एवं कविताएँ सबसे पहले, दादा के उत्तर, समाचार आदि पसन्द आए। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि दिनोंदिन हँसती दुनिया प्रकाशित होती रहे धन्यवाद।

❑ **प्रकाश पंचाल**

खेल का समय : सही उत्तर

'अ' और 'स' असली फोटो हैं।

वर्ग पहेली

□ विकास अरोडा (रेवाड़ी)

संकेत

बाएं से दायें (——>)

1. हँसती दुनिया के प्रकाशक
5. शीशा, आईना
6 भगवान श्री राम के पुत्र
8 केरल में बोली जाने वाली भाषा
11. इस राज्य की राजधानी गंगटोक है
12. 1760 गज की दूरी

ऊपर से नीचे (↓)

1. नवेदन करने वाला
2. भगवान श्री राम के छोटे भाई
3. ठंडा
4. जमीन के अन्दर रहने वाला मकान, दीवार का निचला हिस्सा
7. इलाहाबाद का पुराना नाम
9 घोड़े के मुँह में लगायी जाने वली रस्सी
10. ताज .... आगरा में है

1		2		3	
					4
5				6	
			7		
	8	9			10
11				12	

सही हल (उत्तर)

(1) नि	र्म	(2) ल	जो	(3) शी	
वे		क्ष्म		त	(4) नीं
(5) द	र्प	ण		(6) ल	व
क			(7) प्र		
	(8) म	(9) ल	या	ल	(10) म
		गा	ग		ह
(11) सि	क्कि	म		(12) मी	ल


वाह...वाह...क्या कहने छाबड़ा कैनवस के !
न धूल-मिट्टी की चिन्ता, न बारिश का डर !!

Registered with the Registrar of Newspaper For India under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-1119

Licence No. U(DN) 23/98
Licenced to Post
Without pre-payment

Posted at N.D. P.S.O.
Prescribed dates 21st & 2